मिलान पत्रिका

Boy

मिलान पत्रिका में लग्न कुण्डली को आधार बनाया जाता है तथा इससे वर एवं कन्या दोनों की कुण्डलियों का एक-दूसरे के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर आपसी सम्बन्धों का निर्धारण किया जाता है। इसप्रकार के परामर्श का उद्देश्य सम्बन्ध में उपयुक्त एवं अनुपयुक्त क्षेत्रों का निर्धारण करना है। साथ ही उनके जीवन में आने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं की सूचना भी एकत्रित करना है जिससे कि भविष्य में आपसी सम्बन्धों में किसी प्रकार की परेशानी उत्पन्न न हो।

इसमें 100 से अधिक पृष्ठों का रिपोर्ट समाविष्ट है जिसमें अष्टकूट गुण सारणी के साथ-साथ मिलान की सभी गणनाएं, मांगलिक दोष तथा अन्त में अन्तिम परिणाम दिये गये हैं कि दोनों का विवाह होना चाहिए अथवा नहीं। दोनों व्यक्तियों के बीच अन्तर एवं अनुकूलता की समझ से जीवन को और बेहतर बनाया जा सकता है।

SrNo: 101-111-105-1030 / 287 Date: 18/04/2017

Boy

Girl

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
02/03/1986	जन्म तिथि	02/02/1987
रविवार	दिन	सोमवार
घंटे 07:50:00	जन्म समय	19:05:00 घंटे
घटी 02:40:02	जन्म समय(घटी)	29:49:01 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Meerut
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	29:00:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:45:59	सूर्योदय	07:08:00
18:21:09	सूर्यास्त	17:58:01
23:39:41	चित्रपक्षीय अयनांश	23:40:33

मीन	लग्न	सिंह
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	सूर्य
तुला	राशि	मीन
शुक्र	राशि-स्वामी	गुरु
विशाखा	नक्षत्र	उ०भाद्रपद
गुरु	नक्षत्र स्वामी	शनि
3	चरण	3
व्याघात	योग	सिद्ध
वणिज	करण	बव
ते-तेजवन्त	जन्म नामाक्षर	झ-झनक
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
शूद्र	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
व्याघ्र	योनि	गौ
राक्षस	गण	मनुष्य
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
सर्प	वर्ग	सिंह

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 5वर्ष 3मा 5दि		08:54:43	मीन	लग्न	सिंह	04:37:41	शनि 5वर्ष 6मा 12दि	
बुध		17:32:34	कुंभ	सूर्य	मक	19:29:40	शुक्र	
07/06/2010		28:56:43	तुला	चंद्र	मीन	12:47:01	15/08/2016	
07/06/2027		22:23:13	वृश्चि	मंगल	मीन	23:48:45	15/08/2036	
बुध	03/11/2012	05:28:27	मीन	बुध	कुंभ	03:47:40	शुक्र	16/12/2019
केतु	31/10/2013	08:35:54	कुंभ	गुरु	कुंभ	29:56:47	सूर्य	15/12/2020
शुक्र	31/08/2016	27:33:03	कुंभ	शुक्र	धनु	03:29:12	चन्द्र	16/08/2022
सूर्य	07/07/2017	15:47:25	वृश्चि	शनि	वृश्चि	24:56:53	मंगल	16/10/2023
चन्द्र	06/12/2018	07:27:15	मेष	राहु व	मीन	19:38:39	राहु	16/10/2026
मंगल	04/12/2019	07:27:15	तुला	केतु व	कन्या	19:38:39	गुरु	16/06/2029
राहु	22/06/2022	28:25:38	वृश्चि	हर्ष	धनु	01:39:35	शनि	15/08/2032
गुरु	27/09/2024	11:46:57	धनु	नेप	धनु	13:10:20	बुध	16/06/2035
शनि	07/06/2027	13:34:09	तुला व	प्लूटो	तुला	16:16:28	केतु	15/08/2036

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:39:41 चित्रपक्षीय अयनांश 23:40:33

लग्न-चलित

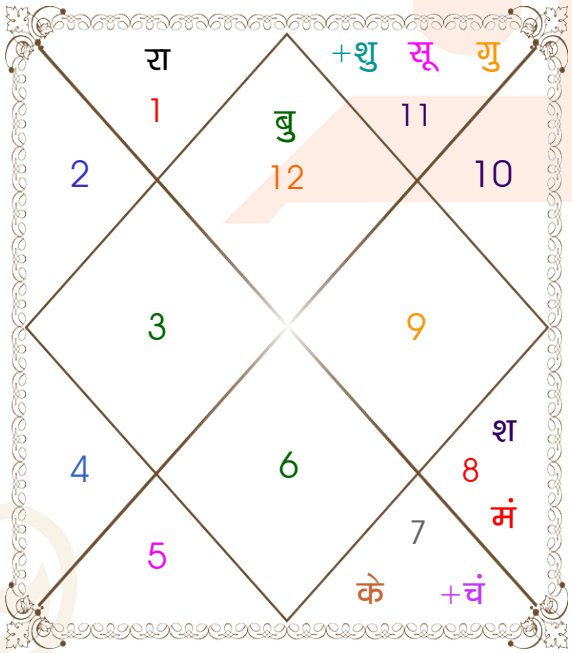

लग्न-चलित

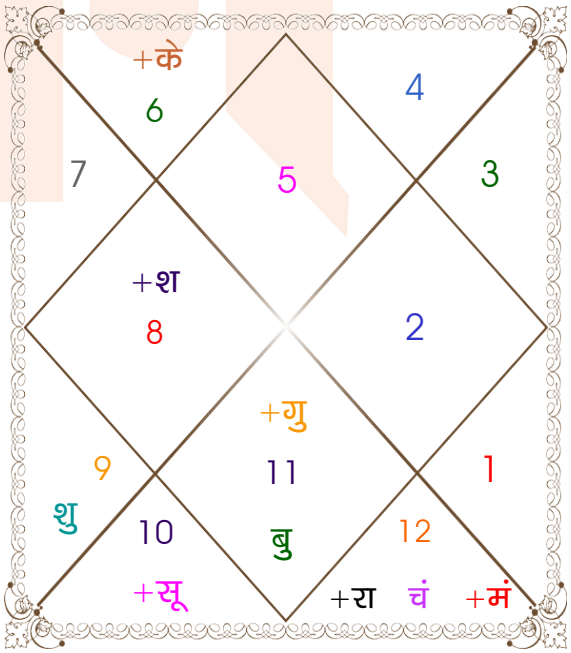

चार्ट एवं ग्राफ

चार्ट एवं ग्राफ के द्वारा ज्योतिषीय गणनाओं के सारांश प्रदर्शित किए गए हैं।

जन्मकुंडली का उपयोग फलकथन हेतु जादुई दर्पण के रूप में किया जाता है। जिसकी सहायता से ज्योतिषी किसी जातक का भूत, वर्तमान एवं भविष्य पढ़ता है। इसमें आपकी जन्मकुंडली के अलावा दूसरे सभी चार्ट जैसे चंद्र कुंडली, नवांश, फलित, कस्यप चार्ट, शोडष वर्ग एवं सुदर्शन चक्र आदि 'चार्ट एवं ग्राफ' खंड में सन्निहित हैं। ग्राफ के द्वारा ग्रहों एवं भावों के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं को प्रदर्शित किया गया है। अष्टकवर्ग ग्राफ के द्वारा यह प्रदर्शित किया गया है कि कौन सा ग्रह आपके जीवन के किस क्षेत्र के लिए सर्वाधिक शुभ अथवा अशुभ हैं। किसी भाव पर सभी ग्रहों के कुल शुभ अथवा अशुभ परिणाम को सर्वाष्टक वर्ग ग्राफ के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

चन्द्र कुंडली

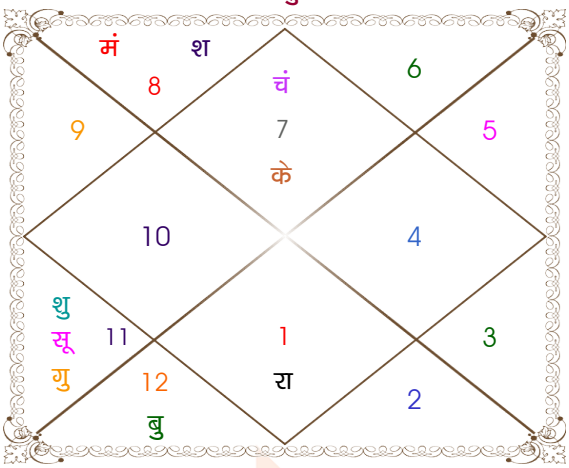

चन्द्र कुंडली

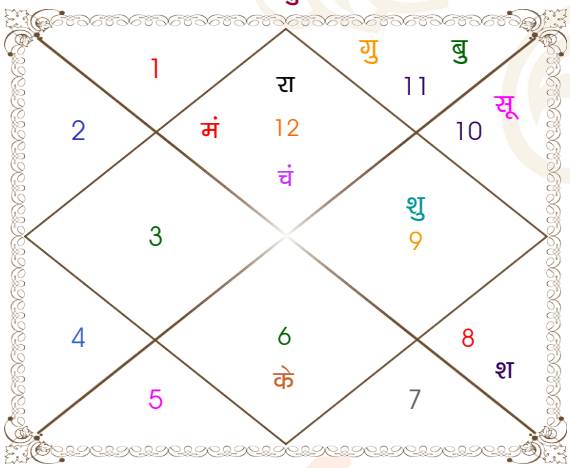

सूर्य कुंडली

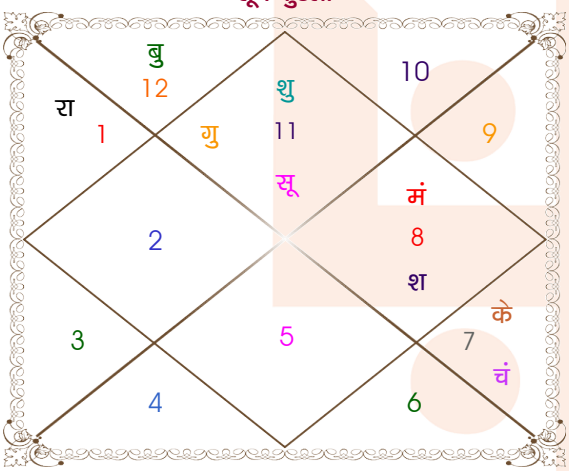

सूर्य कुंडली

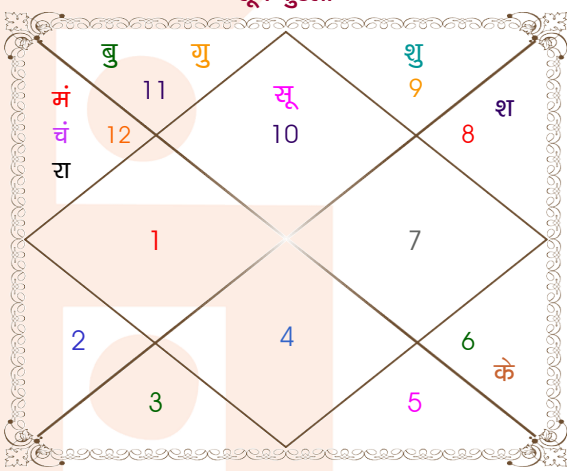

नवमांश कुंडली

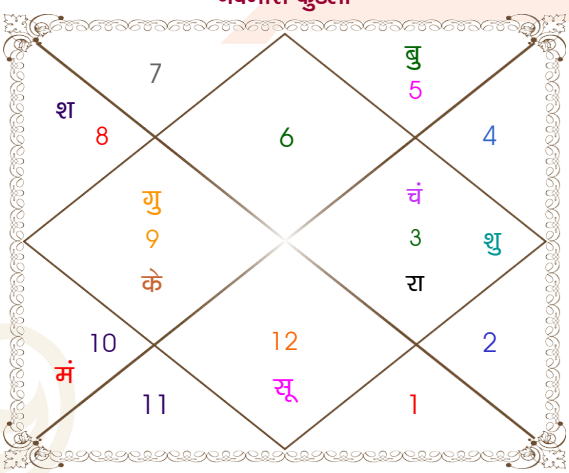

नवमांश कुंडली

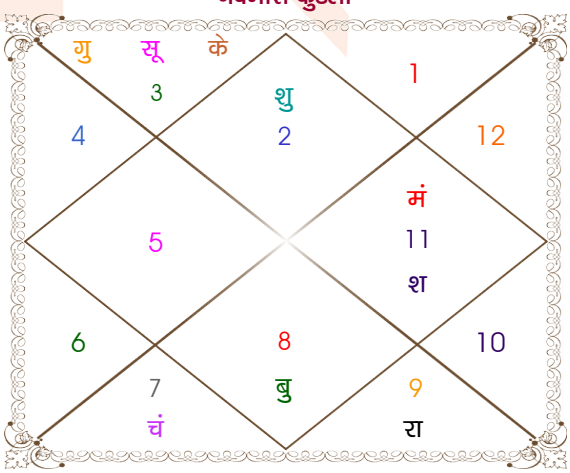

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

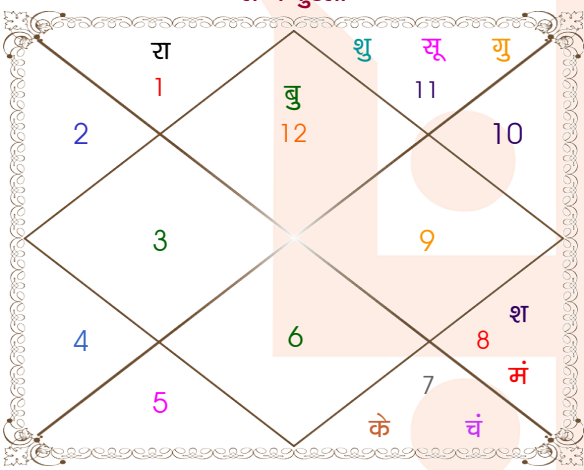

देह विचारः

लग्न कुंडली

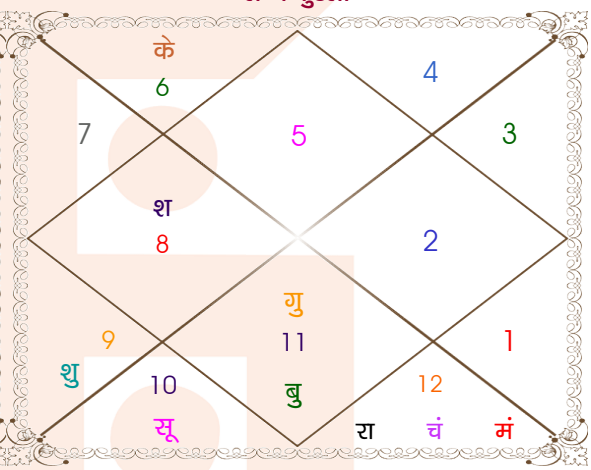

देह विचारः

होरा कुंडली

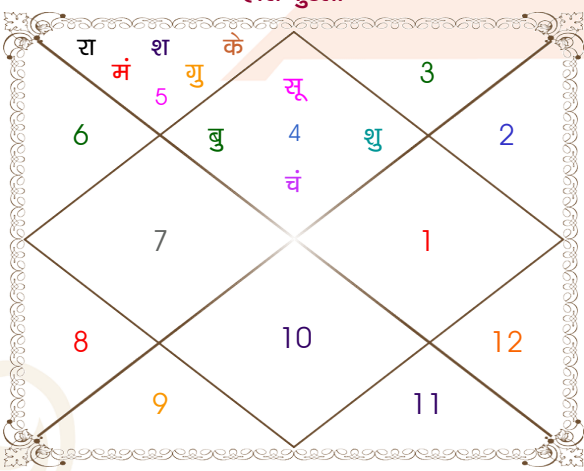

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

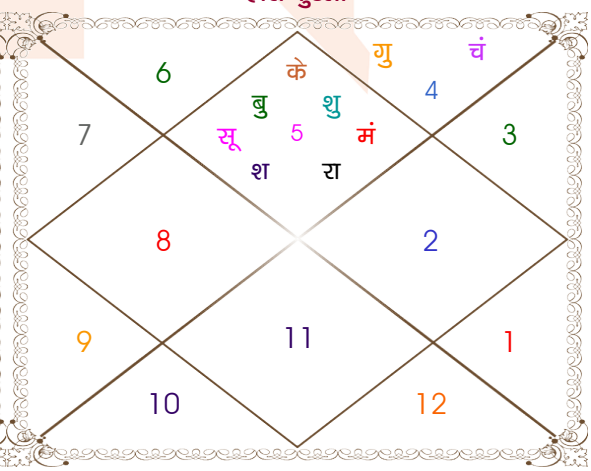

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

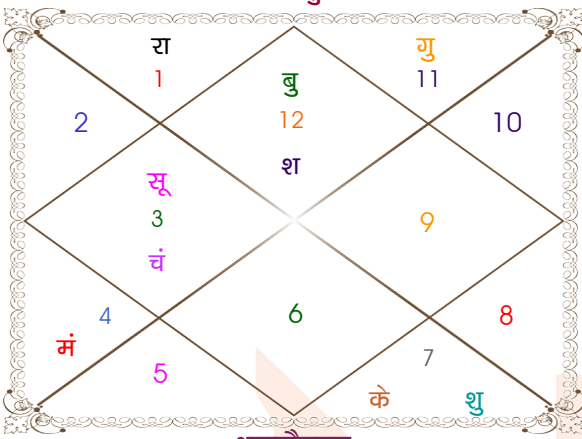

द्रेष्काण कुंडली

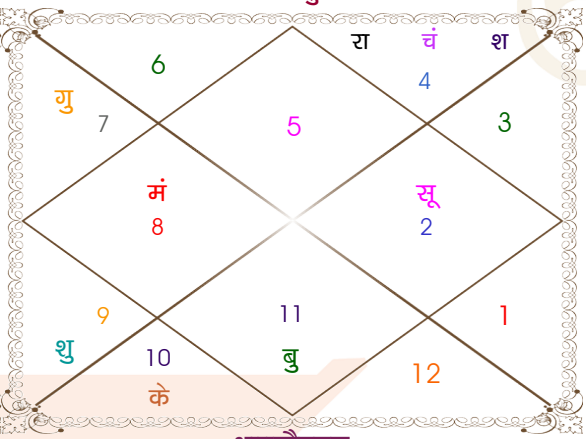

भ्रातृसौख्यम चतुर्थांश कुंडली

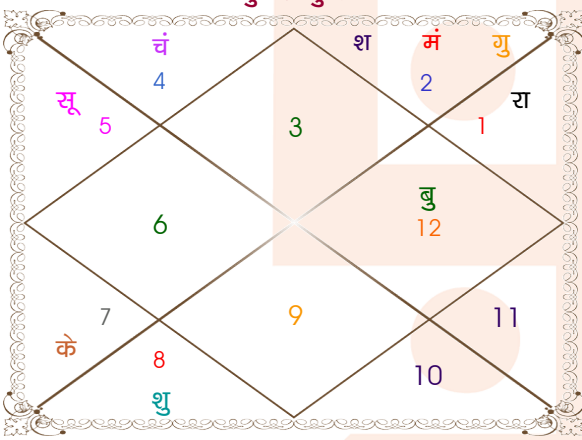

भ्रातृसौख्यम चतुर्थांश कुंडली

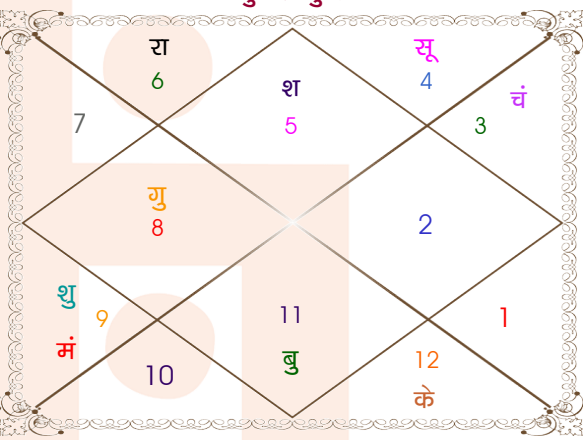

भाग्यविचारः सप्तमांश कुंडली

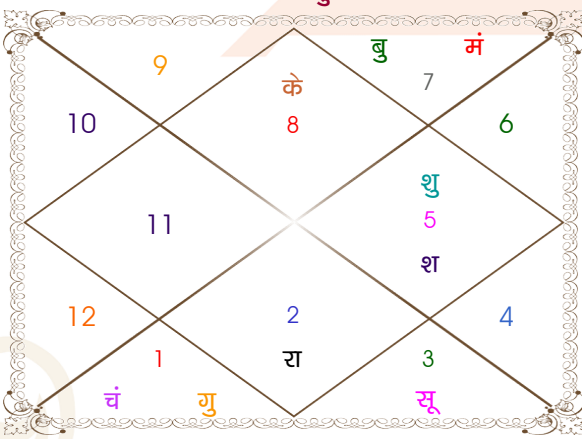

भाग्यविचारः सप्तमांश कुंडली

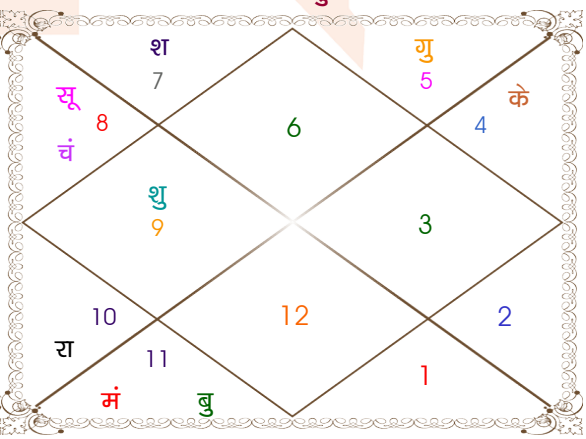

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

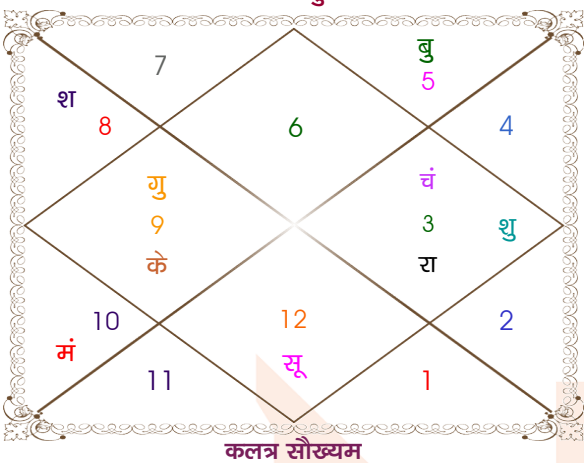

नवमांश कुंडली

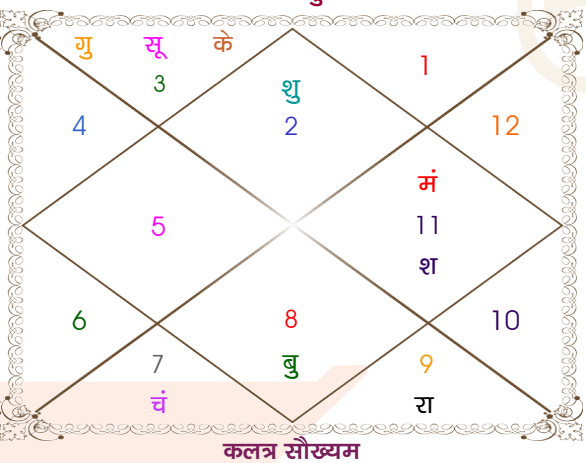

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

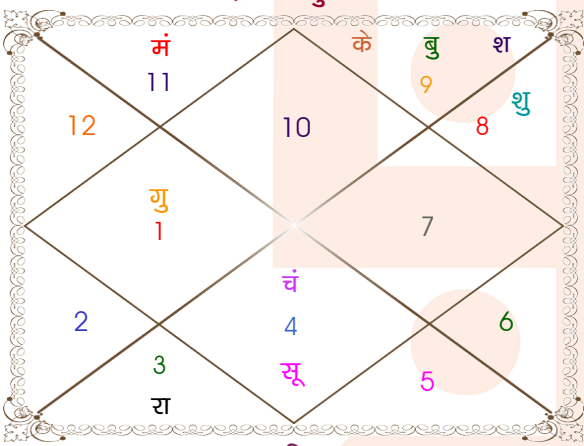

दशमांश कुंडली

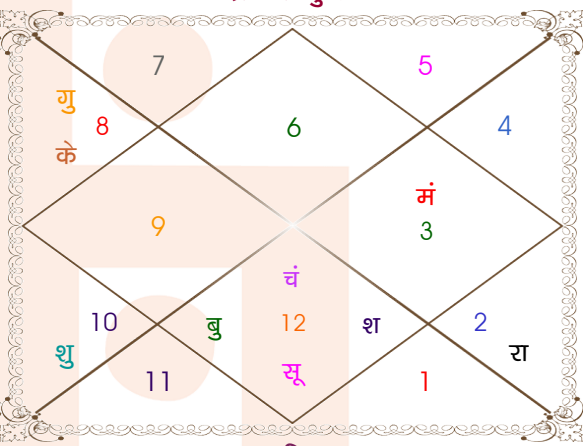

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

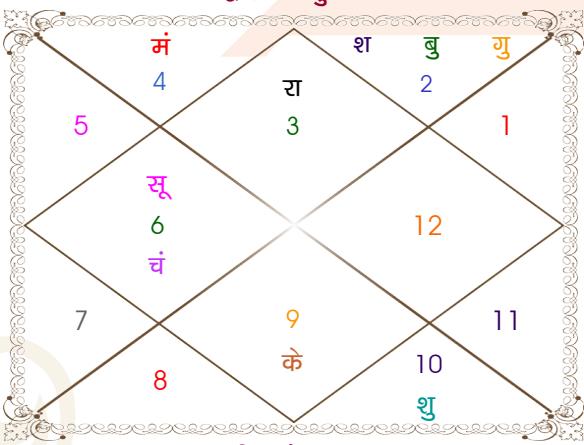

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

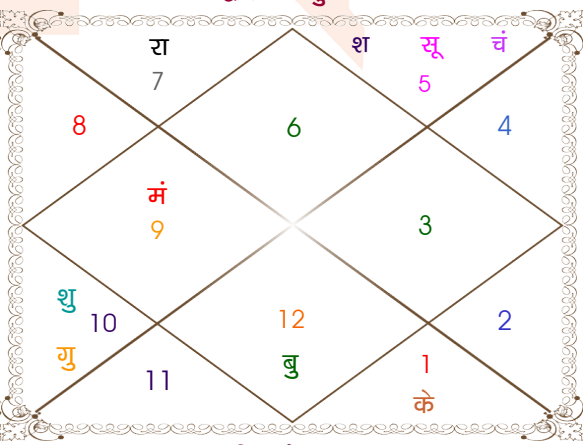

पितृसौख्यम

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

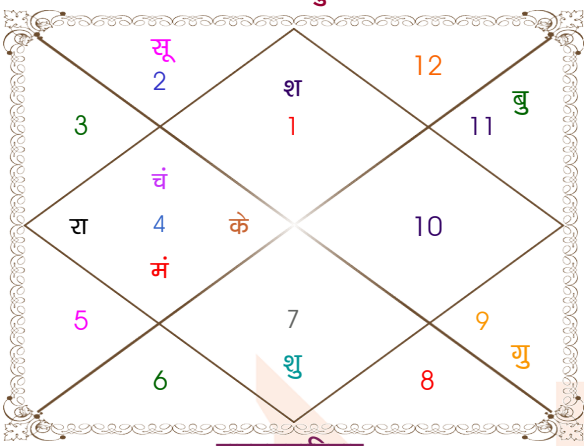

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

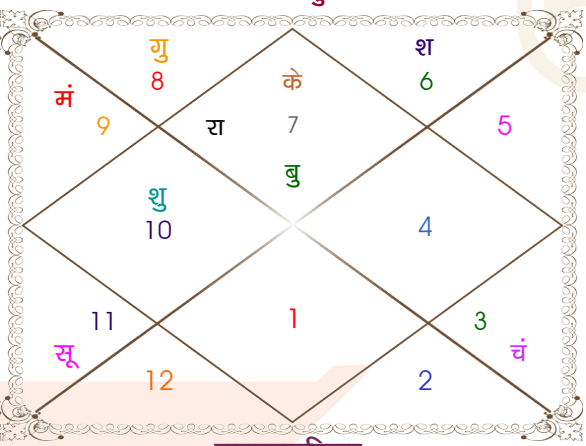

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

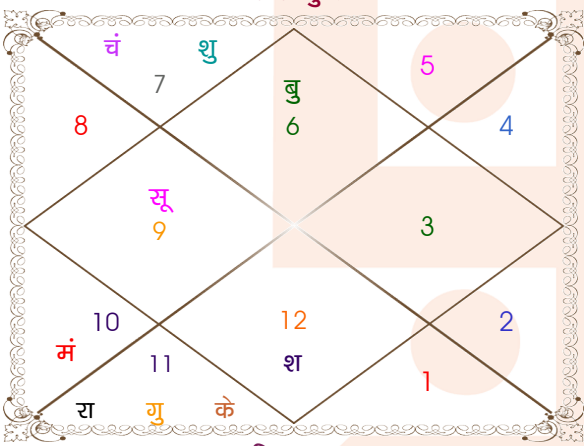

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

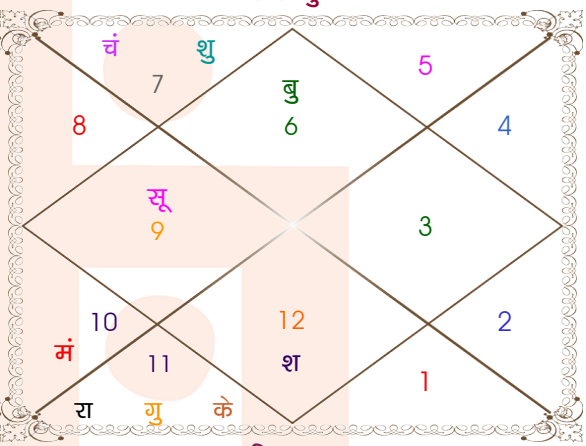

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

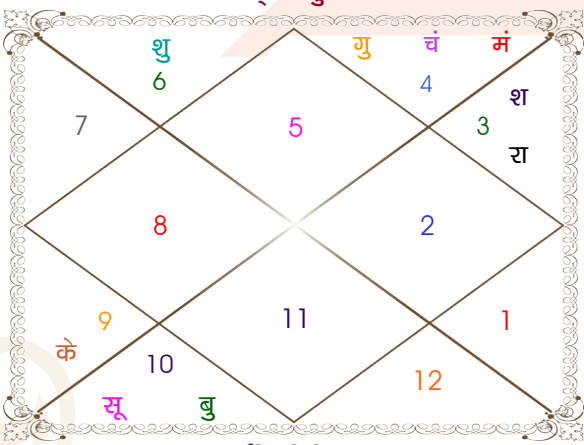

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

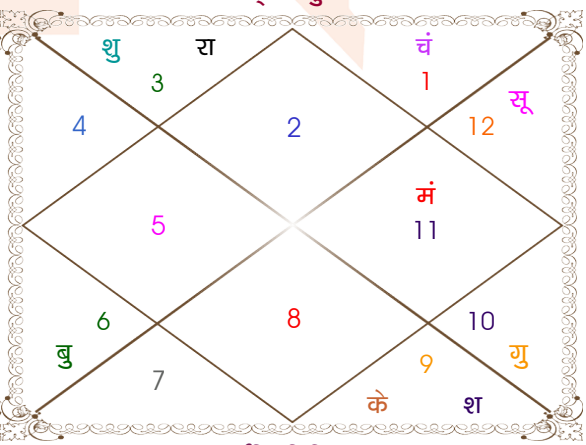

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Boy

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Girl

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

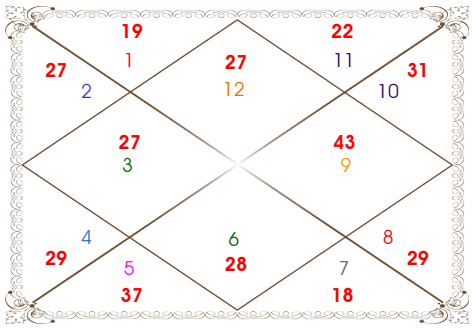

सर्वाष्टकवर्ग

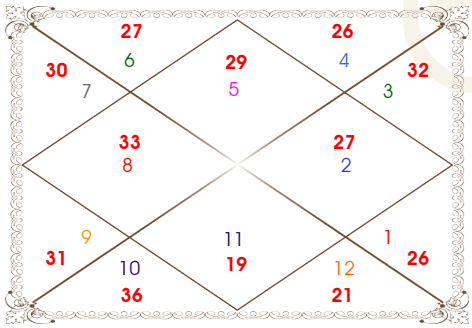

Boy

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	2	2	5	3	2	2	6	6	2	5	39
गुरु	6	3	5	3	6	4	3	7	6	3	4	6	56
मंगल	1	4	3	5	5	3	0	4	6	4	2	2	39
सूर्य	0	5	4	6	7	3	2	4	7	3	5	2	48
शुक्र	3	4	5	4	3	6	5	5	4	6	4	3	52
बुध	2	5	5	6	5	4	3	4	7	5	4	4	54
चंद्र	5	4	3	3	6	5	3	3	7	4	1	5	49
बिन्दु	**19**	**27**	**27**	**29**	**37**	**28**	**18**	**29**	**43**	**31**	**22**	**27**	**337**
रेखा	**37**	**29**	**29**	**27**	**19**	**28**	**38**	**27**	**13**	**25**	**34**	**29**	**335**

Girl

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	2	4	4	2	4	4	3	7	2	1	39
गुरु	7	4	3	3	4	6	5	5	4	6	4	5	56
मंगल	2	5	5	4	3	2	4	4	3	4	1	2	39
सूर्य	3	4	6	5	3	3	5	6	5	5	2	1	48
शुक्र	4	2	6	4	5	4	5	5	5	4	4	4	52
बुध	4	3	6	4	4	5	4	5	7	6	3	3	54
चंद्र	4	5	4	2	6	5	3	4	4	4	3	5	49
बिन्दु	**26**	**27**	**32**	**26**	**29**	**27**	**30**	**33**	**31**	**36**	**19**	**21**	**337**
रेखा	**30**	**29**	**24**	**30**	**27**	**29**	**26**	**23**	**25**	**20**	**37**	**35**	**335**

शोध्य पिंड - Boy

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	234	61	169	120	92	59	100
ग्रह पिंड	92	20	70	22	89	31	15
शोध्य पिंड	326	81	239	142	181	90	115

शोध्य पिंड - Girl

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	140	82	85	87	92	44	90
ग्रह पिंड	49	49	27	46	61	22	47
शोध्य पिंड	189	131	112	133	153	66	137

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

गुरु 5 वर्ष 3 मास 5 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
02/03/1986		07/06/1991		07/06/2010	
07/06/1991		07/06/2010		07/06/2027	
	00/00/0000	शनि	10/06/1994	बुध	03/11/2012
	00/00/0000	बुध	17/02/1997	केतु	31/10/2013
	00/00/0000	केतु	29/03/1998	शुक्र	31/08/2016
	00/00/0000	शुक्र	28/05/2001	सूर्य	07/07/2017
	02/03/1986	सूर्य	10/05/2002	चंद्र	06/12/2018
सूर्य	07/10/1986	चंद्र	10/12/2003	मंगल	04/12/2019
चंद्र	06/02/1988	मंगल	18/01/2005	राहु	22/06/2022
मंगल	12/01/1989	राहु	25/11/2007	गुरु	27/09/2024
राहु	07/06/1991	गुरु	07/06/2010	शनि	07/06/2027

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
07/06/2027		07/06/2034		07/06/2054	
07/06/2034		07/06/2054		06/06/2060	
केतु	03/11/2027	शुक्र	06/10/2037	सूर्य	24/09/2054
शुक्र	02/01/2029	सूर्य	07/10/2038	चंद्र	26/03/2055
सूर्य	10/05/2029	चंद्र	06/06/2040	मंगल	01/08/2055
चंद्र	09/12/2029	मंगल	06/08/2041	राहु	25/06/2056
मंगल	07/05/2030	राहु	06/08/2044	गुरु	13/04/2057
राहु	26/05/2031	गुरु	07/04/2047	शनि	26/03/2058
गुरु	01/05/2032	शनि	07/06/2050	बुध	30/01/2059
शनि	10/06/2033	बुध	07/04/2053	केतु	07/06/2059
बुध	07/06/2034	केतु	07/06/2054	शुक्र	06/06/2060

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
06/06/2060		07/06/2070		07/06/2077	
07/06/2070		07/06/2077		07/06/2095	
चंद्र	07/04/2061	मंगल	03/11/2070	राहु	18/02/2080
मंगल	06/11/2061	राहु	22/11/2071	गुरु	13/07/2082
राहु	08/05/2063	गुरु	27/10/2072	शनि	19/05/2085
गुरु	06/09/2064	शनि	06/12/2073	बुध	07/12/2087
शनि	07/04/2066	बुध	03/12/2074	केतु	24/12/2088
बुध	06/09/2067	केतु	02/05/2075	शुक्र	25/12/2091
केतु	06/04/2068	शुक्र	01/07/2076	सूर्य	18/11/2092
शुक्र	06/12/2069	सूर्य	06/11/2076	चंद्र	20/05/2094
सूर्य	07/06/2070	चंद्र	07/06/2077	मंगल	07/06/2095

शनि 5 वर्ष 6 मास 12 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
02/02/1987		15/08/1992		16/08/2009	
15/08/1992		16/08/2009		15/08/2016	
	00/00/0000	बुध	12/01/1995	केतु	12/01/2010
	00/00/0000	केतु	09/01/1996	शुक्र	14/03/2011
	00/00/0000	शुक्र	09/11/1998	सूर्य	20/07/2011
	00/00/0000	सूर्य	16/09/1999	चंद्र	18/02/2012
	00/00/0000	चंद्र	14/02/2001	मंगल	16/07/2012
	02/02/1987	मंगल	11/02/2002	राहु	03/08/2013
मंगल	29/03/1987	राहु	31/08/2004	गुरु	10/07/2014
राहु	02/02/1990	गुरु	06/12/2006	शनि	19/08/2015
गुरु	15/08/1992	शनि	16/08/2009	बुध	15/08/2016

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
15/08/2016		15/08/2036		16/08/2042	
15/08/2036		16/08/2042		15/08/2052	
शुक्र	16/12/2019	सूर्य	03/12/2036	चंद्र	16/06/2043
सूर्य	15/12/2020	चंद्र	04/06/2037	मंगल	15/01/2044
चंद्र	16/08/2022	मंगल	09/10/2037	राहु	16/07/2045
मंगल	16/10/2023	राहु	03/09/2038	गुरु	15/11/2046
राहु	16/10/2026	गुरु	22/06/2039	शनि	15/06/2048
गुरु	16/06/2029	शनि	03/06/2040	बुध	15/11/2049
शनि	15/08/2032	बुध	10/04/2041	केतु	16/06/2050
बुध	16/06/2035	केतु	16/08/2041	शुक्र	15/02/2052
केतु	15/08/2036	शुक्र	16/08/2042	सूर्य	15/08/2052

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
15/08/2052		16/08/2059		16/08/2077	
16/08/2059		16/08/2077		16/08/2093	
मंगल	11/01/2053	राहु	28/04/2062	गुरु	04/10/2079
राहु	30/01/2054	गुरु	21/09/2064	शनि	16/04/2082
गुरु	06/01/2055	शनि	29/07/2067	बुध	22/07/2084
शनि	15/02/2056	बुध	14/02/2070	केतु	28/06/2085
बुध	11/02/2057	केतु	05/03/2071	शुक्र	27/02/2088
केतु	10/07/2057	शुक्र	04/03/2074	सूर्य	15/12/2088
शुक्र	09/09/2058	सूर्य	27/01/2075	चंद्र	16/04/2090
सूर्य	15/01/2059	चंद्र	28/07/2076	मंगल	23/03/2091
चंद्र	16/08/2059	मंगल	16/08/2077	राहु	16/08/2093

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
31/08/2016		07/07/2017		06/12/2018	
07/07/2017		06/12/2018		04/12/2019	
सूर्य	15/09/2016	चंद्र	19/08/2017	मंगल	28/12/2018
चंद्र	11/10/2016	मंगल	18/09/2017	राहु	20/02/2019
मंगल	29/10/2016	राहु	05/12/2017	गुरु	09/04/2019
राहु	15/12/2016	गुरु	12/02/2018	शनि	06/06/2019
गुरु	25/01/2017	शनि	05/05/2018	बुध	27/07/2019
शनि	15/03/2017	बुध	17/07/2018	केतु	17/08/2019
बुध	28/04/2017	केतु	16/08/2018	शुक्र	16/10/2019
केतु	16/05/2017	शुक्र	11/11/2018	सूर्य	04/11/2019
शुक्र	07/07/2017	सूर्य	06/12/2018	चंद्र	04/12/2019

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
15/08/2016		16/12/2019		15/12/2020	
16/12/2019		15/12/2020		16/08/2022	
शुक्र	06/03/2017	सूर्य	03/01/2020	चंद्र	04/02/2021
सूर्य	06/05/2017	चंद्र	03/02/2020	मंगल	11/03/2021
चंद्र	16/08/2017	मंगल	24/02/2020	राहु	11/06/2021
मंगल	26/10/2017	राहु	19/04/2020	गुरु	31/08/2021
राहु	26/04/2018	गुरु	06/06/2020	शनि	05/12/2021
गुरु	06/10/2018	शनि	03/08/2020	बुध	01/03/2022
शनि	16/04/2019	बुध	24/09/2020	केतु	06/04/2022
बुध	06/10/2019	केतु	15/10/2020	शुक्र	16/07/2022
केतु	16/12/2019	शुक्र	15/12/2020	सूर्य	16/08/2022

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
04/12/2019		22/06/2022		27/09/2024	
22/06/2022		27/09/2024		07/06/2027	
राहु	21/04/2020	गुरु	10/10/2022	शनि	02/03/2025
गुरु	24/08/2020	शनि	19/02/2023	बुध	19/07/2025
शनि	18/01/2021	बुध	16/06/2023	केतु	14/09/2025
बुध	30/05/2021	केतु	03/08/2023	शुक्र	25/02/2026
केतु	23/07/2021	शुक्र	19/12/2023	सूर्य	15/04/2026
शुक्र	26/12/2021	सूर्य	30/01/2024	चंद्र	06/07/2026
सूर्य	10/02/2022	चंद्र	08/04/2024	मंगल	02/09/2026
चंद्र	29/04/2022	मंगल	26/05/2024	राहु	27/01/2027
मंगल	22/06/2022	राहु	27/09/2024	गुरु	07/06/2027

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
16/08/2022		16/10/2023		16/10/2026	
16/10/2023		16/10/2026		16/06/2029	
मंगल	10/09/2022	राहु	28/03/2024	गुरु	23/02/2027
राहु	13/11/2022	गुरु	21/08/2024	शनि	27/07/2027
गुरु	08/01/2023	शनि	11/02/2025	बुध	12/12/2027
शनि	17/03/2023	बुध	16/07/2025	केतु	07/02/2028
बुध	16/05/2023	केतु	18/09/2025	शुक्र	18/07/2028
केतु	10/06/2023	शुक्र	20/03/2026	सूर्य	05/09/2028
शुक्र	20/08/2023	सूर्य	13/05/2026	चंद्र	25/11/2028
सूर्य	10/09/2023	चंद्र	13/08/2026	मंगल	21/01/2029
चंद्र	16/10/2023	मंगल	16/10/2026	राहु	16/06/2029

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
07/06/2027		03/11/2027		02/01/2029	
03/11/2027		02/01/2029		10/05/2029	
केतु	16/06/2027	शुक्र	13/01/2028	सूर्य	09/01/2029
शुक्र	11/07/2027	सूर्य	04/02/2028	चंद्र	19/01/2029
सूर्य	18/07/2027	चंद्र	10/03/2028	मंगल	27/01/2029
चंद्र	31/07/2027	मंगल	04/04/2028	राहु	15/02/2029
मंगल	08/08/2027	राहु	07/06/2028	गुरु	04/03/2029
राहु	31/08/2027	गुरु	03/08/2028	शनि	24/03/2029
गुरु	20/09/2027	शनि	09/10/2028	बुध	11/04/2029
शनि	13/10/2027	बुध	09/12/2028	केतु	19/04/2029
बुध	03/11/2027	केतु	02/01/2029	शुक्र	10/05/2029

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
16/06/2029		15/08/2032		16/06/2035	
15/08/2032		16/06/2035		15/08/2036	
शनि	16/12/2029	बुध	09/01/2033	केतु	11/07/2035
बुध	29/05/2030	केतु	10/03/2033	शुक्र	20/09/2035
केतु	04/08/2030	शुक्र	30/08/2033	सूर्य	11/10/2035
शुक्र	13/02/2031	सूर्य	21/10/2033	चंद्र	16/11/2035
सूर्य	12/04/2031	चंद्र	15/01/2034	मंगल	11/12/2035
चंद्र	17/07/2031	मंगल	16/03/2034	राहु	13/02/2036
मंगल	23/09/2031	राहु	18/08/2034	गुरु	09/04/2036
राहु	14/03/2032	गुरु	03/01/2035	शनि	16/06/2036
गुरु	15/08/2032	शनि	16/06/2035	बुध	15/08/2036

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
10/05/2029		09/12/2029		07/05/2030	
09/12/2029		07/05/2030		26/05/2031	
चंद्र	28/05/2029	मंगल	18/12/2029	राहु	04/07/2030
मंगल	09/06/2029	राहु	09/01/2030	गुरु	24/08/2030
राहु	11/07/2029	गुरु	29/01/2030	शनि	24/10/2030
गुरु	09/08/2029	शनि	22/02/2030	बुध	17/12/2030
शनि	12/09/2029	बुध	15/03/2030	केतु	09/01/2031
बुध	12/10/2029	केतु	24/03/2030	शुक्र	13/03/2031
केतु	24/10/2029	शुक्र	18/04/2030	सूर्य	02/04/2031
शुक्र	29/11/2029	सूर्य	25/04/2030	चंद्र	04/05/2031
सूर्य	09/12/2029	चंद्र	07/05/2030	मंगल	26/05/2031

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
15/08/2036		03/12/2036		04/06/2037	
03/12/2036		04/06/2037		09/10/2037	
सूर्य	21/08/2036	चंद्र	18/12/2036	मंगल	11/06/2037
चंद्र	30/08/2036	मंगल	29/12/2036	राहु	30/06/2037
मंगल	05/09/2036	राहु	25/01/2037	गुरु	17/07/2037
राहु	22/09/2036	गुरु	19/02/2037	शनि	06/08/2037
गुरु	06/10/2036	शनि	19/03/2037	बुध	25/08/2037
शनि	24/10/2036	बुध	14/04/2037	केतु	01/09/2037
बुध	08/11/2036	केतु	25/04/2037	शुक्र	22/09/2037
केतु	15/11/2036	शुक्र	25/05/2037	सूर्य	29/09/2037
शुक्र	03/12/2036	सूर्य	04/06/2037	चंद्र	09/10/2037

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
26/05/2031		01/05/2032		10/06/2033	
01/05/2032		10/06/2033		07/06/2034	
गुरु	10/07/2031	शनि	04/07/2032	बुध	31/07/2033
शनि	02/09/2031	बुध	30/08/2032	केतु	21/08/2033
बुध	21/10/2031	केतु	23/09/2032	शुक्र	20/10/2033
केतु	10/11/2031	शुक्र	29/11/2032	सूर्य	08/11/2033
शुक्र	05/01/2032	सूर्य	20/12/2032	चंद्र	08/12/2033
सूर्य	22/01/2032	चंद्र	22/01/2033	मंगल	29/12/2033
चंद्र	20/02/2032	मंगल	15/02/2033	राहु	21/02/2034
मंगल	11/03/2032	राहु	17/04/2033	गुरु	11/04/2034
राहु	01/05/2032	गुरु	10/06/2033	शनि	07/06/2034

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
09/10/2037		03/09/2038		22/06/2039	
03/09/2038		22/06/2039		03/06/2040	
राहु	28/11/2037	गुरु	12/10/2038	शनि	16/08/2039
गुरु	11/01/2038	शनि	27/11/2038	बुध	04/10/2039
शनि	04/03/2038	बुध	08/01/2039	केतु	25/10/2039
बुध	19/04/2038	केतु	25/01/2039	शुक्र	21/12/2039
केतु	08/05/2038	शुक्र	14/03/2039	सूर्य	08/01/2040
शुक्र	02/07/2038	सूर्य	29/03/2039	चंद्र	06/02/2040
सूर्य	19/07/2038	चंद्र	22/04/2039	मंगल	26/02/2040
चंद्र	15/08/2038	मंगल	09/05/2039	राहु	18/04/2040
मंगल	03/09/2038	राहु	22/06/2039	गुरु	03/06/2040

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
07/06/2034		06/10/2037		07/10/2038	
06/10/2037		07/10/2038		06/06/2040	
शुक्र	27/12/2034	सूर्य	25/10/2037	चंद्र	26/11/2038
सूर्य	26/02/2035	चंद्र	24/11/2037	मंगल	01/01/2039
चंद्र	07/06/2035	मंगल	15/12/2037	राहु	02/04/2039
मंगल	17/08/2035	राहु	08/02/2038	गुरु	22/06/2039
राहु	16/02/2036	गुरु	29/03/2038	शनि	27/09/2039
गुरु	27/07/2036	शनि	26/05/2038	बुध	22/12/2039
शनि	05/02/2037	बुध	16/07/2038	केतु	26/01/2040
बुध	27/07/2037	केतु	07/08/2038	शुक्र	07/05/2040
केतु	06/10/2037	शुक्र	07/10/2038	सूर्य	06/06/2040

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
03/06/2040		10/04/2041		16/08/2041	
10/04/2041		16/08/2041		16/08/2042	
बुध	17/07/2040	केतु	17/04/2041	शुक्र	15/10/2041
केतु	04/08/2040	शुक्र	09/05/2041	सूर्य	03/11/2041
शुक्र	25/09/2040	सूर्य	15/05/2041	चंद्र	03/12/2041
सूर्य	11/10/2040	चंद्र	26/05/2041	मंगल	24/12/2041
चंद्र	06/11/2040	मंगल	02/06/2041	राहु	17/02/2042
मंगल	24/11/2040	राहु	21/06/2041	गुरु	07/04/2042
राहु	09/01/2041	गुरु	08/07/2041	शनि	04/06/2042
गुरु	20/02/2041	शनि	28/07/2041	बुध	26/07/2042
शनि	10/04/2041	बुध	16/08/2041	केतु	16/08/2042

योगिनी दशा

धान्या 0 वर्ष 11 मास 25 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
02/03/1986		25/02/1987		25/02/1991	
25/02/1987		25/02/1991		26/02/1996	
	00/00/0000	भ्राम	07/08/1987	भद्रि	06/11/1991
	00/00/0000	भद्रि	26/02/1988	उल्क	05/09/1992
	00/00/0000	उल्क	26/10/1988	सिद्ध	27/08/1993
	02/03/1986	सिद्ध	06/08/1989	संक	06/10/1994
सिद्ध	28/03/1986	संक	27/06/1990	मंग	26/11/1994
संक	26/11/1986	मंग	07/08/1990	पिंग	08/03/1995
मंग	27/12/1986	पिंग	27/10/1990	धांय	07/08/1995
पिंग	25/02/1987	धांय	25/02/1991	भ्राम	26/02/1996

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
26/02/1996		25/02/2002		25/02/2009	
25/02/2002		25/02/2009		25/02/2017	
उल्क	25/02/1997	सिद्ध	07/07/2003	संक	06/12/2010
सिद्ध	27/04/1998	संक	26/01/2005	मंग	25/02/2011
संक	27/08/1999	मंग	07/04/2005	पिंग	07/08/2011
मंग	27/10/1999	पिंग	27/08/2005	धांय	06/04/2012
पिंग	26/02/2000	धांय	28/03/2006	भ्राम	25/02/2013
धांय	26/08/2000	भ्राम	06/01/2007	भद्रि	07/04/2014
भ्राम	27/04/2001	भद्रि	27/12/2007	उल्क	07/08/2015
भद्रि	25/02/2002	उल्क	25/02/2009	सिद्ध	25/02/2017

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
25/02/2017		25/02/2018		26/02/2020	
25/02/2018		26/02/2020		25/02/2023	
मंग	07/03/2017	पिंग	07/04/2018	धांय	27/05/2020
पिंग	27/03/2017	धांय	07/06/2018	भ्राम	26/09/2020
धांय	27/04/2017	भ्राम	27/08/2018	भद्रि	25/02/2021
भ्राम	06/06/2017	भद्रि	06/12/2018	उल्क	27/08/2021
भद्रि	27/07/2017	उल्क	07/04/2019	सिद्ध	28/03/2022
उल्क	26/09/2017	सिद्ध	27/08/2019	संक	26/11/2022
सिद्ध	06/12/2017	संक	05/02/2020	मंग	27/12/2022
संक	25/02/2018	मंग	26/02/2020	पिंग	25/02/2023

भद्रिका 1 वर्ष 5 मास 14 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
02/02/1987		18/07/1988		19/07/1994	
18/07/1988		19/07/1994		18/07/2001	
	00/00/0000	उल्क	18/07/1989	सिद्ध	28/11/1995
	00/00/0000	सिद्ध	18/09/1990	संक	18/06/1997
	02/02/1987	संक	18/01/1992	मंग	28/08/1997
संक	27/02/1987	मंग	18/03/1992	पिंग	17/01/1998
मंग	19/04/1987	पिंग	18/07/1992	धांय	18/08/1998
पिंग	29/07/1987	धांय	17/01/1993	भ्राम	29/05/1999
धांय	28/12/1987	भ्राम	17/09/1993	भद्रि	18/05/2000
भ्राम	18/07/1988	भद्रि	19/07/1994	उल्क	18/07/2001

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
18/07/2001		18/07/2009		19/07/2010	
18/07/2009		19/07/2010		18/07/2012	
संक	29/04/2003	मंग	29/07/2009	पिंग	28/08/2010
मंग	19/07/2003	पिंग	18/08/2009	धांय	28/10/2010
पिंग	28/12/2003	धांय	17/09/2009	भ्राम	17/01/2011
धांय	28/08/2004	भ्राम	28/10/2009	भद्रि	29/04/2011
भ्राम	18/07/2005	भद्रि	18/12/2009	उल्क	28/08/2011
भद्रि	28/08/2006	उल्क	16/02/2010	सिद्ध	18/01/2012
उल्क	28/12/2007	सिद्ध	28/04/2010	संक	28/06/2012
सिद्ध	18/07/2009	संक	19/07/2010	मंग	18/07/2012

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
18/07/2012		19/07/2015		19/07/2019	
19/07/2015		19/07/2019		18/07/2024	
धांय	17/10/2012	भ्राम	28/12/2015	भद्रि	29/03/2020
भ्राम	16/02/2013	भद्रि	18/07/2016	उल्क	27/01/2021
भद्रि	18/07/2013	उल्क	19/03/2017	सिद्ध	17/01/2022
उल्क	17/01/2014	सिद्ध	28/12/2017	संक	27/02/2023
सिद्ध	18/08/2014	संक	17/11/2018	मंग	19/04/2023
संक	19/04/2015	मंग	28/12/2018	पिंग	29/07/2023
मंग	19/05/2015	पिंग	19/03/2019	धांय	28/12/2023
पिंग	19/07/2015	धांय	19/07/2019	भ्राम	18/07/2024

योगिनी दशा

धान्या 0 वर्ष 11 मास 25 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
25/02/2023		25/02/2027		26/02/2032	
25/02/2027		26/02/2032		25/02/2038	
भ्राम	07/08/2023	भद्रि	06/11/2027	उल्क	25/02/2033
भद्रि	26/02/2024	उल्क	05/09/2028	सिद्ध	27/04/2034
उल्क	26/10/2024	सिद्ध	27/08/2029	संक	27/08/2035
सिद्ध	06/08/2025	संक	06/10/2030	मंग	27/10/2035
संक	27/06/2026	मंग	26/11/2030	पिंग	26/02/2036
मंग	07/08/2026	पिंग	08/03/2031	धांय	26/08/2036
पिंग	27/10/2026	धांय	07/08/2031	भ्राम	27/04/2037
धांय	25/02/2027	भ्राम	26/02/2032	भद्रि	25/02/2038

भद्रिका 1 वर्ष 5 मास 14 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
18/07/2024		19/07/2030		18/07/2037	
19/07/2030		18/07/2037		18/07/2045	
उल्क	18/07/2025	सिद्ध	28/11/2031	संक	29/04/2039
सिद्ध	18/09/2026	संक	18/06/2033	मंग	19/07/2039
संक	18/01/2028	मंग	28/08/2033	पिंग	28/12/2039
मंग	18/03/2028	पिंग	17/01/2034	धांय	28/08/2040
पिंग	18/07/2028	धांय	18/08/2034	भ्राम	18/07/2041
धांय	17/01/2029	भ्राम	29/05/2035	भद्रि	28/08/2042
भ्राम	17/09/2029	भद्रि	18/05/2036	उल्क	28/12/2043
भद्रि	19/07/2030	उल्क	18/07/2037	सिद्ध	18/07/2045

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
25/02/2038		25/02/2045		25/02/2053	
25/02/2045		25/02/2053		25/02/2054	
सिद्ध	07/07/2039	संक	06/12/2046	मंग	07/03/2053
संक	26/01/2041	मंग	25/02/2047	पिंग	27/03/2053
मंग	07/04/2041	पिंग	07/08/2047	धांय	27/04/2053
पिंग	27/08/2041	धांय	06/04/2048	भ्राम	06/06/2053
धांय	28/03/2042	भ्राम	25/02/2049	भद्रि	27/07/2053
भ्राम	06/01/2043	भद्रि	07/04/2050	उल्क	26/09/2053
भद्रि	27/12/2043	उल्क	07/08/2051	सिद्ध	06/12/2053
उल्क	25/02/2045	सिद्ध	25/02/2053	संक	25/02/2054

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
18/07/2045		19/07/2046		18/07/2048	
19/07/2046		18/07/2048		19/07/2051	
मंग	29/07/2045	पिंग	28/08/2046	धांय	17/10/2048
पिंग	18/08/2045	धांय	28/10/2046	भ्राम	16/02/2049
धांय	17/09/2045	भ्राम	17/01/2047	भद्रि	18/07/2049
भ्राम	28/10/2045	भद्रि	29/04/2047	उल्क	17/01/2050
भद्रि	18/12/2045	उल्क	28/08/2047	सिद्ध	18/08/2050
उल्क	16/02/2046	सिद्ध	18/01/2048	संक	19/04/2051
सिद्ध	28/04/2046	संक	28/06/2048	मंग	19/05/2051
संक	19/07/2046	मंग	18/07/2048	पिंग	19/07/2051

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
25/02/2054		26/02/2056		25/02/2059	
26/02/2056		25/02/2059		25/02/2063	
पिंग	07/04/2054	धांय	27/05/2056	भ्राम	07/08/2059
धांय	07/06/2054	भ्राम	26/09/2056	भद्रि	26/02/2060
भ्राम	27/08/2054	भद्रि	25/02/2057	उल्क	26/10/2060
भद्रि	06/12/2054	उल्क	27/08/2057	सिद्ध	06/08/2061
उल्क	07/04/2055	सिद्ध	28/03/2058	संक	27/06/2062
सिद्ध	27/08/2055	संक	26/11/2058	मंग	07/08/2062
संक	05/02/2056	मंग	27/12/2058	पिंग	27/10/2062
मंग	26/02/2056	पिंग	25/02/2059	धांय	25/02/2063

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
19/07/2051		19/07/2055		18/07/2060	
19/07/2055		18/07/2060		19/07/2066	
भ्राम	28/12/2051	भद्रि	29/03/2056	उल्क	18/07/2061
भद्रि	18/07/2052	उल्क	27/01/2057	सिद्ध	18/09/2062
उल्क	19/03/2053	सिद्ध	17/01/2058	संक	18/01/2064
सिद्ध	28/12/2053	संक	27/02/2059	मंग	18/03/2064
संक	17/11/2054	मंग	19/04/2059	पिंग	18/07/2064
मंग	28/12/2054	पिंग	29/07/2059	धांय	17/01/2065
पिंग	19/03/2055	धांय	28/12/2059	भ्राम	17/09/2065
धांय	19/07/2055	भ्राम	18/07/2060	भद्रि	19/07/2066

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

2	मूलांक	2
2	भाग्यांक	2
2, 7, 8	मित्र अंक	2, 7, 8
4, 5, 6	शत्रु अंक	4, 5, 6
20,29,38,47,56	शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
सोम, मंगल, गुरु	शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
चन्द्र, मंगल, गुरु	शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मकर, मिथुन	मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मिथुन, वृश्चिक, मकर	मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
लक्ष्मी	अनुकूल देवता	जगदम्बा
पुखराज	शुभ रत्न	माणिक्य
सुनहला, पीला हकीक	शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
मूंगा	भाग्य रत्न	मूंगा
कांसा	शुभ धातु	ताम्र
पीत	शुभ रंग	नारंगी
पूर्वोत्तर	शुभ दिशा	पूर्व
संध्या	शुभ समय	सूर्योदय
हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प	दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दाल चना	दान अन्न	गेहुँ
घी	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Boy

जीवन रत्नः	पुखराज	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मूंगा	भाग्योदय, धन
कारक रत्नः	मोती	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख

Girl

जीवन रत्नः	माणिक्य	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मूंगा	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, सुख
कारक रत्नः	पुखराज	दम्पति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
शुभ उपरत्नः	हीरा	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	--- --
साढेसाती तृतीय ढैया	01/03/1986-16/12/1987
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/1990-06/03/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/06/2000-22/07/2002

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/1993-10/08/1995
साढेसाती द्वितीय ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढेसाती तृतीय ढैया	16/04/1998-05/06/2000
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/07/2002-05/09/2004
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-02/11/2014

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	21/07/2022-24/03/2025
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती तृतीय ढैया	26/10/2027-11/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/05/2032-06/07/2034
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	17/02/2052-09/09/2054
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती तृतीय ढैया	01/04/2057-22/05/2059
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/07/2061-15/02/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Boy

आपकी जन्मपत्रिका में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को अर्थोपार्जन करने में विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है। खर्चों की बहुलता रहती है। परिणामस्वरूप आर्थिक परेशानियाँ बनी रहती हैं और विद्या अध्ययन में विशेष रूप से सफलता हासिल नहीं होती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी संबंध विच्छेद होने की सम्भावना भी बन जाती है। जातक अपने जीवन में अनेक स्त्रियों से संसर्ग कर अपमानित होता है। परिवारिक सदस्यों से विभेद रहता है और मित्रगण कदम-कदम पर धोखा देते हैं तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव रहता है। जातक सदा परोपकार करने में तत्पर रहता है परन्तु अन्य लोग इसका नाजायज फायदा उठाते रहते हैं, जिससे जातक को केवल नुकसान ही मिलता है। जातक के पिता की मृत्यु अल्पायु में हो जाती है। सुख भोग का अभाव रहता है। भूत प्रेतों से परेशानियाँ बनी रहती हैं।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख का अभाव रहता है। पुत्र होकर भी क्रूर एवं दुष्ट प्रवृत्ति का हो जाता है और मनमानी करने वाला होता है तथा आज्ञा का पालन प्रायः नहीं के बराबर ही करता है। जातक के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट होती रहती है और इस योग के प्रभाव से जातक मानसिक रूप से चिन्तित रहता है। अपने वृद्धावस्था को लेकर सोचता रहता है कि क्या होगा, किस तरह समय व्यतीत होगा तथा इस अवस्था में जाकर जातक को कष्ट ही मिलता है। लेकिन सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में इच्छित सफलता प्राप्त करता है और जीवन में सम्मान भी पाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000(अट्ठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।
10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें।
काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Girl

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का पैतृक धन सम्पत्ति आंशिक रूप में नुकसान होता है। भाग्य उदय होने में थोड़ी बहुत रुकावट आती है परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान स्वतः हट जाता है। व्यापार कार्य में विशेष रूप से परिश्रम करने पर लाभ मिलता है। नौकरी में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है और यदि नौकरी मिल जाती है तो पदावनति होने का भय रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता और दूषित भी हो जाता है। जातक बात-बात पर लड़ाई झगड़े करने को तैयार हो जाता है। जातक को परिश्रम करने के बावजूद भी सही फल प्राप्त नहीं होता है। उधार में दिया हुआ द्रव्य प्रायः वापस नहीं आता है और जातक थोड़ा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है एवं कभी-कभी झंझट करने को भी तैयार हो जाता है तथा मानसिक परेशानी घेरे रहती है। कभी रोग व्याधि शरीर में लग जाती है और जातक को दुर्घटना का भय बना रहता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। परन्तु विशेष परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते

रहते हैं, पर अपने कार्य में वे प्रायः सफल नहीं होते। जातक को अपने कुटुम्बियों से अपयश मिलता है एवं आत्मीय जन भी सम्मान नहीं देते हैं। अपने मित्रगणों के द्वारा छले जाते हैं। जिस कारण जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	गौ	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	गुरु	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	तुला	मीन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			**36**	**11.50**		

कुल : 11.5 / 36

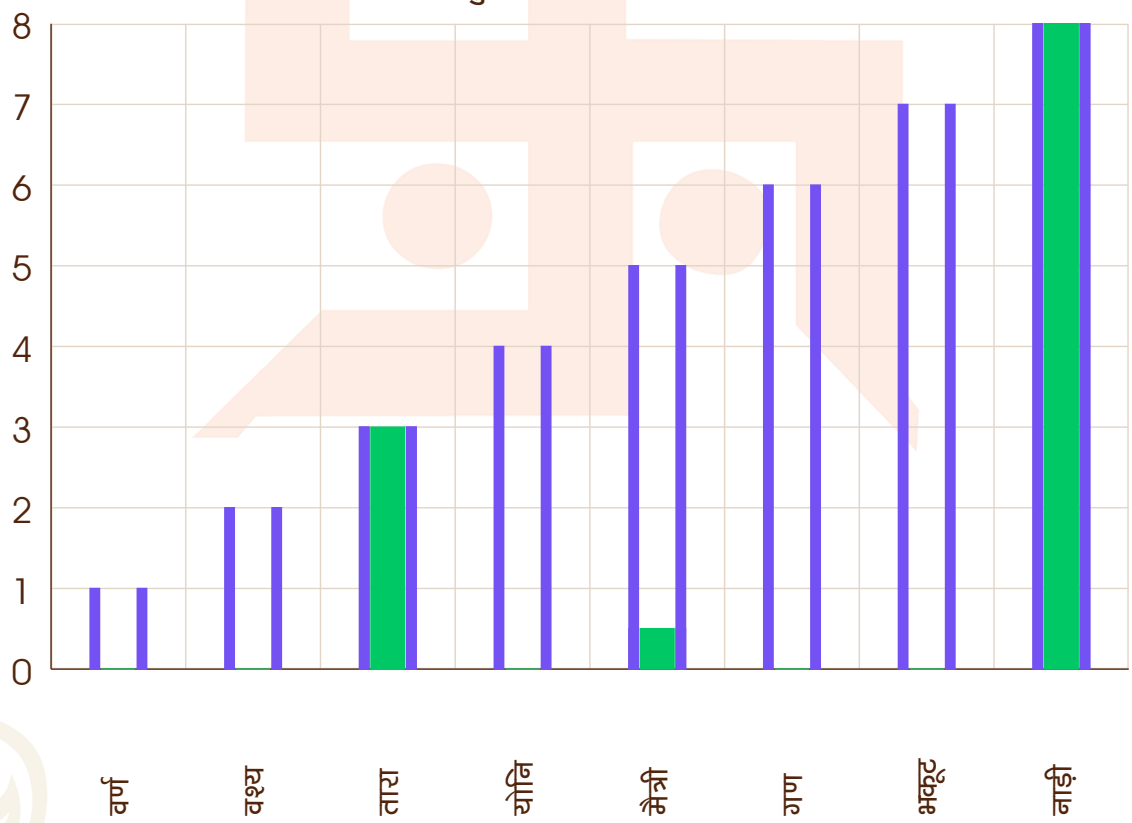

अष्टकूट मिलान

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

Boy का वर्ग सर्प है तथा Girl का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Boy और Girl का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Boy मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

Girl मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में सप्तम भाव में मकर राशि में तथा अष्टम भाव में मीन राशि में मंगल हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Girl कि कुण्डली में अष्टम् भाव में मीन राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Girl कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Boy तथा Girl में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

फलकथन

प्रत्येक व्यक्ति अपने भविष्य में झांकने का प्रयास करता है। ज्योतिष ऐसा करने में सहायक होता है।

भविष्यकथन वैदिक ज्योतिष का सर्वाधिक उपयोगी विभाग है। जातक के व्यक्तित्व का विचार नवग्रहों बारह भाबों और बारह राशियों के आधार पर किया जाता है। एक ग्रह की स्थिति का फलकथन करने के लिए विभिन्न सूत्रों को अपनाया जाता है जैसे एक भाव, राशि या नक्षत्र में तथा दूसरे ग्रह से उसकी स्थिति या जन्म के समय दिन कौन सा है अथवा कैसे ग्रह योग बन रहे हैं आदि। आपके जीवन को प्रभावित करने वाले विभिन्न घटकों का अध्ययन करें।

मेलापक फलित

स्वभाव

Boy की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला तथा Girl की राशि जलतत्व युक्त मीन राशि है जल तथा वायुतत्व में नैसर्गिक विषमता होने के कारण Boy और Girl में स्वभावगत असमानता रहेगी जिससे परस्पर संबध तनाव पूर्ण रहेंगे तथा वेवाहिक जीवन विशेष अच्छा नहीं होगा। अतः मिलान अनुकूल नहीं होगा।

Boy की जन्म राशि का स्वामी शुक्र तथा Girl की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति परस्पर शत्रु तथा समराशियों में स्थित है। वैवाहिक जीवन में सुख के लिए यह ग्रह स्थिति विशेष अच्छी नहीं होगी। इसके प्रभाव से Boy और Girl के मध्य परस्पर मतभेद एवं विरोध रहेगा तथा एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करके कमियों पर विशेष ध्यान देंगे फलतः आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा तथा एक दूसरे को सुख दुख में सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे।

Boy एवं Girl की राशियां परस्पर षष्ठ एवं अष्टम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह प्रबल भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा दाम्पत्य संबंध उग्रता का रूप धारण करेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि कोण रहेगा तथा सुख सहयोग प्रदान करने की अपेक्षा विवाद आदि पर अधिक समय व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करके कमियों पर विशेष ध्यान देंगे अतः तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न होगी ।

Boy का वश्य मानव तथा Girl का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं अलग होनंगी। साथ ही दाम्पत्य संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

Boy का वर्ण शूद्र तथा Girl का वर्ण ब्राह्मण है अतः इनकी कार्य क्षमताओं में भी अंतर रहेगा। Boy की प्रवृति किसी भी कार्य को परिश्रम तथा ईमानदारी से पूर्ण करने की रहेगी जबकि Girl शैक्षणिक धार्मिक एवं सत्कार्यो को ही सम्पन्न करेंगी।

धन

Boy का जन्म अतिमित्र तथा Girl का सम्पत नामक तारा में हुआ है। इसके प्रभाव से Girl एक धनवान तथा भाग्यशाली महिला होंगी तथा Girl के शुभ प्रभाव से उनकी आर्थिक स्थिति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर सम रहेगा। अतः स्वपरिश्रम से ही इच्छित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही मंगल का भी कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार Boy और Girl आरामदायक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Boy और Girl को लाटरी, सट्टे या अन्य स्रोतों से अनायास धन प्राप्ति की संभावना

होगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों का वे उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त वे जायदाद तथा आभूषण आदि को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे।

स्वास्थ्य

Boy की नाड़ी अन्त्य तथा Girl की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं होगा तथा स्वास्थ्य इस ओर से सामान्य रहेगा परन्तु मंगल के प्रभाव से Boy का स्वास्थ्य प्रभावित होगा एवं समय समय पर वे हृदय रोग संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगे। साथ ही पित या रक्त संबंधी कष्ट की भी अनुभूति होगी। धातु संबंधी रोगों का भी Boy पर प्रभाव रहेगा एवं संभोग क्रिया में भी उन्हें शिथिलता का आभास होगा जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति उत्पन्न हो सकती है। अतः उपरोक्त दोषों में न्यूनता लाने के लिए Boy को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए। इसके अतिरिक्त मूंगा धारण करना भी Boy के लिए श्रेयस्कर रहेगा।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Boy और Girl का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Boy और Girl के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Girl के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Girl को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Girl को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Boy और Girl सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Boy और Girl का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Girl के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। Girl भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा Girl भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से

उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का Girl को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

Boy की सास से संबधों में मधुरता बनी रहेगी तथा आपसी सामंजस्य के कारण एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा तथापि यदा कदा संबधों में औपचारिकता के भाव का भी समावेश रहेगा। उनके मध्य मतभेदों की न्यूनता रहेगी। अतः समय समय पर Boy सपत्नीक ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन Boy ससुर के साथ मधुर संबधों में नित्य वृद्धि करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य एवं बुद्धिमता से इनके मध्य अपनत्व का भाव बना रहेगा तथा समय समय पर उनसे इन्हें उपयोगी सलाह भी मिलती रहेगी। इसके अतिरिक्त साले एवं सालियों से भी मित्रतापूर्ण संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। इस प्रकार ससुराल के लोगों का Boy के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रहेगा तथा सास को छोड़कर अन्य लोगों से अनौपचारिक संबध रहेंगे। फलतः वे इनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा अपना वांछित सहयोग समय समय पर प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतसंबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

Boy

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगे।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगे, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे।

आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

Girl

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव की महिला होंगी। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगी। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगी।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगी, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना

पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगी वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय महिला होंगी तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगी। आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

Boy

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

Girl

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगी। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगी। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्तिवश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निधारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

Boy

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र, गण राक्षस तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ते" या "तै" से प्रारम्भ होगा।

आप हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहेंगे तथा अधिकांश ग्रहस्थ संबंधी कार्यों को उसी के निर्देश तथा सलाह से सम्पन्न करेंगे। उसका आपके ऊपर इतना प्रभाव होगा कि आप उसकी आज्ञा के बिना स्वतंत्र रूप से कुछ करने में अपने आपको असमर्थ सा अनुभव करेंगे। आपका स्वभाव भी अभिमानी होगा तथा आप अपनी इस प्रवृति का समय समय अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे तथा आपका कोई भी दुश्मन आपके समक्ष नही टिकेगा। साथ ही आप उग्र स्वभाव के भी होंगे तथा अकारण ही छोटी छोटी बातों में उत्तेजित होते रहेंगे। अतः इससे कई बार आप अतिरिक्त परेशानी का सामना करेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक कोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

कभी कभी आप अन्य जनों के विरूद्ध अकारण ही अपने मन में द्वेष भावना को रखने वाले होंगे। यदि कोई अन्य आदमी सफलता प्राप्त करता हैं या कोई विशेष उपलब्धि उसे प्राप्त होती हैं तो उसके प्रति आपके मन में व्यर्थ ही ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना उत्पन्न हो जाएगी। दूसरों की चीजों को देख कर आपके मन लोभ की भावना उत्पन्न होगी जिससे आप मानसिक रूप से हमेशा आन्दोलित रहेंगे। आपका शरीर तजे युक्त तथा आकर्षक रहेगा तथा बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगे एवं इसी वाक्यटुता के आधार पर कई महत्वपूर्ण सफलताएं भी अजित करेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

आप प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति रहेंगे तथा देवताओं के हवनकार्यादि धार्मिक कृत्यो को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप का मित्रवर्ग भी सीमित रहेगा।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

आप अर्न्तमन में दया के भाव की भी अल्पता कभी कभी दृष्गिोचर होगी। साथ ही समाज में अन्य जनों से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।

Girl

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि गो, गण मनुष्य, वर्ण विप्र, वर्ग मेष तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "झ" या "झा" अक्षर से होगा।

आप अपने परिवार या कुल में श्रेष्ठ होगी तथा सभी परिवारिक लोग आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। शारीरिक रूप से आप मध्यम कद की होंगी तथा अच्छे कर्मो को करने के लिए सदैव रूचिशील रहेंगी एवं यत्नपूर्वक सत्कार्यो को ही सम्पन्न करेंगी। आपके इन कार्यो से अन्य सामाजिक जन भी लाभान्वित रहेंगे तथा आपसे सदैव प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप धनवैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगी एवं एक धनाढ्य महिला के रूप में समाज में आप ख्याति प्राप्त करेंगी। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा जिसका आप समय समय पर प्रदर्शन करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी महिला होंगी एवं दूर दूर तक सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

आप सत्वगुणों से हमेशा युक्त रहेंगी एवं जीवन में हमेशा इनका पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। त्याग की भावना भी आपके अर्न्तमन में रहेगी जिसका आप समयानुसार परिवार तथा समाज के मध्य प्रदर्शन करेंगी। आप एक धनवान महिला होंगी तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का भी परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करेंगी अतः एक विदुषी के रूप में भी आपका समाज में प्रभाव रहेगा।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

आप भाषण देने में दक्ष रहेंगी तथा अपने ओजस्वी भाषणों से सामाजिक जनों को प्रभावित करने में नित्य सफल रहेंगी तथा समाज के सभी वर्गो में आप का प्रभाव रहेगा। जीवन में आप सुखसंसाधनों से भी सम्पन्न रहेंगी एवं प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपका परिवार विस्तृत रहेगा एवं जीवन में पुत्र पौत्रादि के सुख को प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगी। आपका शत्रुपक्ष हमेशा आपसे पराजित तथा भयभीत रहेगा एवं आपका विरोध करने में सर्वथा असमर्थ रहेगा। साथ ही आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी एवं नियम पूर्वक धर्माचरण में रत रहेंगी।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

आप समाज में अपने सद्गुणों तथा सत्कार्यो से गौरव अर्जित करेंगी एवं गौरवशाली महिला के रूप में प्रतिष्ठित रहेंगी। धर्म के विषय में आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा एवं समाज में एक श्रद्धेय तथा सम्मानीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसिक एवं

वीरतापूर्ण कार्यों को करने के लिए हमेशा उद्यत रहेंगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

Boy

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से देखने में सुन्दर रहेंगे। आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊंची होगी। समाज में अन्य जनों से आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे तथा विविध प्रकार के वाहन साधनो से भी सुसम्पन्न रहेंगे। वाहन एवं भूमि आदि जायदाद को आप शक्ति शाली होंगे तथा इनसे पूर्ण रूपेण धनार्जन करके धनैश्वर्य से सर्वथा युक्त रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे तथा आपका समाज में पूर्ण प्रभाव रहेगा जिससे लोग आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। पत्नी से आप हमेशा पराजित से रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी की भावना एवं सलाह से सदा सम्पन्न करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में आप दक्षता प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमानुसार इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। धन धान्यादि को संग्रह करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के कल्याण कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देव, ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा शुद्धता से रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शरीर भी सुगन्धित रहेगा। आपको यात्रा तथा भ्रमणादि का विशेष शौक रहेगा अतः इसी में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगे। क्रय विक्रय के कार्य में आप अत्यन्त चतुराई का प्रदर्शन करेंगे। आप समाज में देववाचक शब्द के द्वितीय नाम को धारण करके समाज में ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। आप अपने समीपी संबंधियों तथा बन्धुओं का प्रयत्न पूर्वक भलाई तथा सहयोग करेंगे। परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको समाज में अपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य की पूर्ण प्रधानता रहेंगी अतः अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। न्याय के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेंगी तथा स्वयं भी हमेशा निष्पक्ष भाव से अपने भावों को स्पष्ट करेंगे। आपकी इस निष्पक्षता तथा न्याय के प्रति श्रद्धा को देखकर अन्य लोग अपने विवादों का समाधान करने के लिए आपको मध्यस्थ या

पंच बनाकर आपका फैसला स्वीकार करेंगे। आपकी सन्तति भी अल्प मात्रा में ही रहेंगी तथा भाग्योदय भी काफी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद न बङा अपितु मध्यम रहेगा। सरकार के उच्च अधिकारी तथा पदाधिकारी वर्ग को प्रसन्न करने में आप चतुर होंगे तथा इन लोगों से पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अत्याधिक बोलेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता होगी क्यो कि लोग आपसे ऐसी अपेक्षा नही करेंगे। साथ ज्योतिष शास्त्र का भी आपको न्यूनाधिक ज्ञान रहेगा। भाइयों एवं सेवक जनों के प्रति आप पूर्ण रूप से अनुरक्त रहेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप अनुचित अवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ सकेगा तथा दुःखनानुभूति भी करनी पड़ेगी। आप मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका प्रदर्शन आप जीवन में समयानुसार करती रहेंगी। आपकी आखें हमेशा चंचल रहेगी तथा धनागमन भी चंचलता से ही होगा अर्थात् कभी अत्याधिक तथा कभी अत्यल्प। इससे आपकी आथिक स्थिति हमेशा विषम ही बनी रहेगी। आप घर में बलवान तथा बाहर निर्बलता का अहसास करेंगे। मित्रो के मध्य आप प्रिय रहेंगे तथा विदेश में भी निवास कर सकेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अपने जीवन काल में विविध प्रकार के वाहनों तथा ऐश्वर्य वैभव से आप सुसम्पन्न रहकर इनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति दानशील रहेंगी तथा दीन दुःखियों की यथा शक्ति आप सहयोग तथा सहायता करते रहेंगे। स्त्री के आप प्रिय रहेंगे तथा उससे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शुक्ल योग, शतभिषा नक्षत्र तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सर्वथा वजित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नही चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, चावल, श्वेत चन्दन आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फल भी कम ही होंगे। साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Girl

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप एक सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी। आपकी मस्तक विशाल एवं नासिका उन्नत होगी। साथ ही आपकी आखें भी आकर्षक तथा दर्शनीय रहेंगी। आपके समस्त शारीरिक अंग सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। आपकी कमर पतली होगी। शिल्प कला या चित्रकारी में आप की हार्दिक रूचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता तथा ख्याति भी अर्जित करेंगी। शत्रुवर्ग को परास्त करने में आप सक्षम रहेंगी तथा ये भी आपसे सर्वदा भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आप ज्ञानार्जन करेंगी तथा समाज में एक विदुषी के स्थान को प्राप्त करने में सफल होंगी। गान विद्या के प्रति भी आपके मन में अनुराग रहेगा एवं न्यूनाधिक इस क्षेत्र में आप दक्षता प्राप्त कर सकेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा यत्नपूर्वक इसके पालन में आप तत्पर रहेंगी। समाज के सभी वर्ग में आप प्रिय रहेंगी एवं कई लोगों से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे। आप अपने सम्भाषण में अत्यन्त ही मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे अन्य लोग प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही कई प्रकार के सुख संसाधनों से आप सुशोभित रहेंगी एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप में क्रोध का भाव न्यूनतम रूप में ही विद्यमान रहेगा। साथ ही सरकारी सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगी एवं खान से उत्पन्न द्रव्यों से आप विशेष लाभार्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप का अपने पति के ऊपर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा वे सभी सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुस्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा या नाव आदि में सैर करने के प्रति आपकी तीव्रेच्छा भी

करेगी। इसके अतिरिक्त आप एक दानशील महिला भी होंगी एवं जीवन में यथाशक्ति इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जल से उत्पन्न होने वाले द्रव्यों तथा रत्नों से भी पूर्ण लाभार्जित करेंगी अथवा इससे आप आजीविका भी अर्जन कर सकती हैं। साथ ही आपको अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति की धन सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा उसका आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। सुन्दर एवं नवीन वस्त्रों के प्रति आपकी प्रवल आसक्ति रहेगी तथा इनको धारण करने तथा प्राप्त करने के लिए नित्य लालयित रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप शारीरिक कद से मध्यम रहेगी।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरुचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप की जल पीने की इच्छा सामान्य से प्रवल रहेंगी तथा दिन में कई बार आप इसका उपयोग करेंगी। आप अपने पति पर पूर्ण रूप से विश्वास करेंगी तथा उनसे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी। अतः आपका गृहस्थ जीवन सामान्य रूप से सुखी रहेगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्य मान रहेगी एवं अन्य व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार मानेंगी एवं हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। आपके सद्गुणों से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं यथोचित आदर भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप परम सौभाग्य शाली महिला होंगी तथा कई महत्वपूर्ण कार्यों को अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल से सम्पन्न करेंगी।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप अपनी इन्द्रियों को वश में रखने में समर्थ रहेंगी तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। सत्वगुणों से भी आप सर्वदा युक्त रहेंगी। साथ ही आप एक चतुर तथा बुद्धिमती महिला होंगी एवं आपके सभी कार्य चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। जल क्रीड़ा करने में आप को अत्यन्त ही आनन्दानुभूति की प्राप्ति होगी

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप जीविका अर्जन में अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। साथ ही कई बार आय स्रेतों में व्यवधान उत्पन्न होने के कारण आपको आर्थिक कष्ट का भी सामना करना पड़ेगा। आपकी शरीर कान्तिमान होगा एवं इससे आपके सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। पिता से प्राप्त धन से भी आप युक्त रहेंगी एवं प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप में साहस का अभाव नहीं रहेगा तथा नित्य साहसिक कार्यों को करने के लिए भी उद्यत रहेंगी एवं अपने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्यों को साहस से ही सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त आप स्वभाव से सन्तोषी होंगी एवं जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी पर सन्तुष्ट होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी कोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रकृति की महिला होंगी तथा शौर्योचित कार्यों को सम्पन्न करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। समाज के सभी वर्गो में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा एवं सभी लोग आपको श्रद्धेय सम्माननीय तथा पूजनीय समझेंगे एवं कुल या परिवार में आप विशेष आदरणीया तथा सम्माननीया समझी जाएंगी। सेवा कार्यों में भी आपकी रूचि रहेगी अतः यत्नपूर्वक आप इन कार्यों को भी सम्पन्न करती रहेंगी। आपको तीव्रगति से चलना रूचिकर लगेगा तथा इसी का आप अनुपालन करती रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य लोगों के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी एवं उनसे आपको पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप स्वभाविक सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व से सुशोभित रहकर समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का भी परिश्रम पूर्वक अच्छा ज्ञान प्राप्त करेंगी तथा एक विदुषी के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त कई सामाजिक लोगों से भी आपका मधुर व्यवहार तथा संबंध रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टि करण, शुक्रवार , चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदाता रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण

में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पति चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं समस्त अशुभ प्रभाव नष्ट होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी साथ ही सर्वत्र लाभमार्ग भी पशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

पाया विचार

Boy

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीडित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

Girl

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

गण फलादेश

Boy

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपका मन में भी करूणा के भाव की परिलक्षित होगा। लेकिन साहस का आप में अभाव नही रहेगा। अपने साहसी स्वभाव के कारण अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए स्वयं उत्सुक रहेंगे। आपकी छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोध प्रदर्शन करने की आदत रहेगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा शारीरिक बल का अभाव नही होगा परन्तु अन्य जनों से आपका कलह चलता रहेगा फलतः अधिकांश लोग आपसे वैमनस्य का भाव रखेंगे। अतः अन्य जनों से विनम्रता पूर्वक व्यवहार करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपकी आकृति भी सुन्दर होगी परन्तु वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटु होगी जो श्रोता को बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगेगी। अतः मधुर शब्दों का वार्तालाप में प्रयोग करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

Girl

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति धार्मिक होगी एवं ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव रहेगा। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा। अतः समय समय पर आप इसका प्रदर्शन करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। आपके अर्न्तमन में दया एवं करूणा का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों एवं जरूरतामन्द लोगों के लिए आप अपनी इस भावना का अनुपालन करने के लिए आप नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही आप शारीरिक बल से भी परिपूर्ण रहेंगी एवं कई कलाओं तथा कार्यों को सम्पन्न करने में निपुणता प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही आप कान्तियुक्त शरीर से युक्त रहेंगी तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य कई जनों को भी आप सुख प्रदान करने में समर्थ रहेंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

समाज में आप एक आदरणीया तथा सम्मानीया महिला होंगी एवं विपुल धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहकर जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आपकी आखें देखने में बड़ी होगी

तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी एवं इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता तथा ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त नगर वासियों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा तथा वे लोग आपकी आज्ञानुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Boy

व्याघ्र योनि में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रता प्रिय रहेगी। आप किसी भी कार्य को अपनी इच्छानुसार करना पसन्द करेंगे तथा बाहरी किसी भी हस्तक्षेप को पसन्द नही करेंगे। धन धान्य का आप यत्नपूर्वक अर्जन करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। गुणों को ग्रहण करने की प्रवृति भी आपके मन में हमेशा विद्यमान रहेगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में एक पूर्ण प्रशिक्षित विशेषज्ञ के रूप में कार्य करेंगे। अतः सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धन वैभव तथा ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नही रहेगा तथा इससे पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न होकर जीवन व्यतीत करेंगे। लेकिन आप स्वयं ही अपनी प्रशंसा अपने मुख से करेंगे अतः इससे कभी कभी आपकी सामाजिक अवमान होगी।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

Girl

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप पुरूष जाति में अत्यन्त ही प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आप उत्साह की भावना से सर्वदा युक्त रहेंगी एवं इसी भाव से अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता भी अर्जित कर सकेंगी। वाद विवाद के क्षेत्र में आप अत्यन्त ही सफल समझी जाएंगी तथा अपने वाक्पटुता से सबको प्रभावित करेंगी एवं अपने कार्यों को भी सिद्ध करने में सफल रहेंगी।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

लग्न फल

Boy

आपका जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कन्या का नवमांश एवं मीन का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादिक ज्योतिषीय आकृति आपके जीवन को धन संपत्ति से युक्त आमोद-प्रमोद एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण आनंदमय जीवन बिताने के साधनों से युक्त करता है।

प्रायः हर दशा में ज्योतिषीय प्रभाव आपका पक्षधर है। यदि आप अपने हस्तगत कार्य व्यवसाय को समय पर सुव्यवस्थित ढंग एवं समर्पण की भावना से संपादित कर लिए तो आपका जीवन सफल होने की संभावना है, बर्शेते कि आप सकारात्मक ढंग से कार्यो का संपादन करें। फलस्वरूप यह आपके लिए उन्नति कारक होगा। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आप वासनात्मक प्रवृति को बहुत महत्त्व देकर इन कार्यो से संबंधित रहते है। यदि आप इस प्रवृति हेतु सतर्कता नहीं बरतें तो यह वासना आपको मिट्टी पलीत कर देगा। अर्थात् आपका विनाश कर देगा। आप इनका उन्मूलन करें अन्यथा इस उत्तेजना के कारण आपके जीवन की ललिमा नष्ट हो जाएगी तथा इस प्रवृति के कारण मात्र आपका परिवार ही अस्त-व्यस्त नहीं हो जाएगा। बल्कि यह आपको अकर्मण्य बना कर आपकें कार्य कलाप से भी दिशा हीन बना देगा। परंतु यदि आप इस प्रवृत्ति को समाप्त कर दिए तो आप बहुत अच्छी प्रकार उन्नति कर सकेंगे। आप धन संचय कर सकेंगे। इस प्रकार आप मात्र अपने उपार्जन को ही नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि आप धन संपत्ति भी सर्वथा अर्जित करेंगे। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप अपने प्रतिपक्षी को परास्त कर देंगे जो कि आपके कार्य-व्यवसाय को नष्ट करने का प्रयास करेगा।

आप मात्र एक सुखद एवं अभिमंत्रित भवन के स्वामी होंगे। बल्कि हर दशा में अपने मित्रों के अपना कर अपनी मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आप समाजिक क्लब के सदस्य होंगे। आप अपनी भद्रता एवं अतिथ्य सत्कार के कारण अपने मित्र मंडली में प्रख्यात भी होंगे। परंतु आपको कुछ समस्याओं से मुठ-भेड़ भी करना पड़ेगा। आप अन्य लोगों के लिए किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाने वाले बल्कि अतिशय विश्वास पात्र हैं। आप किसी के भी साथ सामंजस्य एवं सकारात्मक फल प्राप्ति की उत्कंठा रखते हैं। जब आप किसी भी मित्र के साथ प्रतिज्ञा करते हैं उसे बहुत अच्छी प्रकार निभाते हैं। परंतु क्या वे इस प्रकार पीछें भी लौट सकते है। नहीं। वास्तव में संयोगवश ऐसा कुछ घटित हो जाए उस परिस्थिति में जो आपसे संबंधित है। वे लोग आपकी आवश्यकता के समय अथवा जरूरत पड़ने पर अपने कार्य को त्याग कर आपके पक्ष में अपना योगदान करते हैं। अतएव आप उन पर अत्यंत भरोसा कर के अन्यों को उपेक्षित अथवा वहिष्कृत कर देते हैं।

यदि आप सतर्कता पूर्वक मर्यादित पथ पर चलते हैं तो आपके पारिवारिक सदस्य तथा सामान्य जन आपके गुणों एवं साहसिक प्रवृति तथा दानशीलता हेतु आपकी प्रशंसा करेंगे। आप धार्मिक प्रवृति के प्राणी हैं। आप तीर्थ स्थलों का परिदर्शन करेंगे एवं पौढ़ावस्था में आप भक्ति के प्रदर्शन में अभिरूचि रखेंगे तथा धर्म-दर्शन एवं पराविज्ञान में दक्ष हो जाएंगे। आप इस विषय में बहुत

अधिक ज्ञानार्जन कर सकते हैं। यदि आप चयन करेंगे तो कोई छोटा धर्मोपदेशक भी बन सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन गुरुवार, मंगलवार एवं रविवार का दिन उत्तम हैं। शेष साप्ताहिक तीन दिन यथा बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सामान्य फलदायी है।

आपके लिए अंकों में उत्तम एवं विश्वसनीय अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु हर दशा में 8 अंक अनुकूल नहीं है।

आपके लिए रंगों में रंग पीला, लाल, गुलाबी एवं नारंगी रंग आपके लिए अनुकूल हैं। परंतु नीला रंग आपके लिए किसी भी दशा में अनुकूल नहीं है।

Girl

आपका जन्म मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में सिंह लग्न में हुआ था। लग्नोदय के साथ-साथ मेदिनीय क्षितिज पर बृष राशि का नवमांश एवं सिंह राशि का द्रेष्काण भी उदित था। इनके प्रभाव से यह स्पष्टत सूचना मिलती है कि आप पूर्ण रूपेण सुन्दर एवं आरामदायक उत्तम जीवन व्यतीत करेंगी। जीवन क्रम में कोई गम्भीर चिन्तनीय समस्याएं उत्पन्न नहीं होगी।

आप सिंह राशीय समन्वय की परिधि में आपका समय कोलाहलपूर्ण रहेगा। आप अन्तरात्मा से साहसिक प्रवृति की महिला है। आपको अपनी गतिशीलता से अप्रसन्नता प्राप्ति होती हैं। यदि आप निर्भयता पूर्वक सच्ची लग्न से व्यवसायिक कार्य प्रारम्भ करें तो आपको उत्तम एवं सन्तोषजनक फल प्राप्त होंगे। परन्तु आपके प्रभावशाली कार्य कलाप के सम्पादन पर आपके लाभ का अधिकांश भाग किसी भी परिस्थिति में व्यय करेंगी। आप चाहती है कि आपके परिवार के लोगों का पहनावा वस्त्रादि उत्तम रहें तथा आप इन वस्तुओं पर अच्छा धन व्यय करें। जिससे आपके घरेलू रहन सहन प्रभावशाली दिखाई दे। आप अपनी मित्र मण्डली के आमोद-प्रमोद एवं मिलन समारोह पर भी खूब व्यय करेंगी। आप सर्वथा धार्मिक आयोजनों पर तथा दान धर्म के कार्यो में अत्यन्त धन प्रदान करेंगी। परिणाम स्वरूप आप वृद्धावस्था में यह अनुभव करेंगी कि पूर्व में किया गया धन व्यय के कारण इस समय धन का बड़ा अभाव हुआ है। अतः इस प्रकार से अति मात्रा में धन व्यय पर नियंत्रण करें। अतः उत्तम तो यह है कि आप अपने धन की थैली का मुंह इस प्रकार नहीं खोले। मुख्यतः आपके जीवन का भाग्यशाली समय आपके 25 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होगा।

आपको आत्म विश्वास है कि मैं धनी तथा सर्व विद्या से परिपूर्ण हूँ। आप का व्यवहार बहुत अन्धाधुंध अर्थात् दुःसाहसपूर्ण है। आप अन्य विकल्प के पूर्व अपने कार्य व्यवसाय के सम्बंध में शीघ्र निर्णय ले। अतः आपको व्यवसायिक विषयों पर अपने मित्रों तथा शुभ चिन्तकों द्वारा अच्छी परामर्श ग्रहण करने की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। वास्तव में आपको अपने निर्णय पर किसी भी प्रकार का गम्भीरतापूर्वक सामंजस्य न करे। यदि आप अपनी मद्यपान करने की मनोवृति में बदलाव नहीं ला सकी तो आपके जीवन में उच्चस्तरीय अभ्युदय युक्त विशेषतः अर्थहीन हो जाएगा।

यदि आप अपना पारिवारिक जीवन उत्तम प्रकार से व्यतीत करने की अभिलाषी हैं, तो आपको अपनी उत्तेजनात्मक प्रवृति को नियंत्रित करने की अभ्यास करनी चाहिए। यदि आप अकस्मात आपने पारिवारिक सदस्यों पर कोघ्र प्रदर्शन कर अनुपयुक्त मतान्तरिक व्यवहार करती रही

तो आपका प्रसन्नतम परिवारिक जीवन अस्त-व्यस्त हो सकता है। वास्तव में आप घरेलू जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकती हैं। यथा आपके पति तथा आपकी प्यारी सन्तानें आपको हार्दिक स्नेह प्रदान कर सकती हैं बशर्ते कि आप भी उसके बदले में समान आदान प्रदान करती रहें। आपकी विपरीत योनि के प्रति जो प्रसिद्धि है, एक गम्भीर एवं चिन्तनीय है। जिस विषय पर आपको सतर्क रहना चाहिए। आपकी यह प्रवृति आपके पति को सशंकित करती है। आपको अपने जीवन संगी की आशंकाओं का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण करना चाहिए। क्योंकि आप विपरीत योनि के सदस्यों द्वारा प्रसिद्ध एवं प्रभावशाली है। इसका यह अर्थ नहीं कि आप अपने जीवन साथी के प्रति विश्वघात करेंगी।

आपके जन्म प्रभाव से यह स्पष्ट है कि आप मुख्यतः एवं बृहत्कार कार्य कलाप करने की मनोवृति से युक्त हैं। आप अपने अधिनस्थ छोटे-छोटे कार्यों को कार्यान्वित नहीं करना चाहती हैं। आप स्थायी रूप से निगम (कारपोरेशन), कम्पनी तथा भूमि भवन-सम्बंधी कार्य बिन्दु को व्यवहृत करने के प्रति उपयुक्त है।

आप निश्चित रूप से सामान्यतया पूर्ण स्वस्थ रहेंगी। परन्तु आपको वृद्धावस्था के प्रति सावधानी बरतनी होगी क्योंकि ऐसा अवसर आ सकता है कि आपके रीढ़ की हड्डियों की परेशानी तथा हृदय सम्बंधी रोग से ग्रसित हो जाएं। आपकी शराब पीने की आदत एवं अतिरिक्त भोजन करने की आदतों को त्यागना वृद्धावस्था के लिए सहायक एवं अनुकूल होगा।

आपके लिए रंग लाल, हरा एवं नारंगी रंग के वस्त्रों का उपयोग अनुकूल है। रंग काला एवं सफेद रंगों का परित्याग करना श्रेयष्कर है।

आपके अनुकूल अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक है। आपके लिए अंक 2, 7 एवं 8 अंक त्याज्य है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

ग्रह फल - सूर्य

Boy

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

Girl

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

Boy

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

Girl

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

Boy

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

Girl

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

ग्रह फल - बुध

Boy

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

Girl

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

ग्रह फल - गुरु

Boy

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

Girl

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

ग्रह फल - शुक्र

Boy

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

Girl

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

ग्रह फल - शनि

Boy

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, कोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

Girl

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, कोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

ग्रह फल - राहु

Boy

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

Girl

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

ग्रह फल - केतु

Boy

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

Girl

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

Boy

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ रहते हैं। इनकी प्रवृति सरल एवं समानता की प्रतीक होती है तथा भेद भाव से ये दूर रहते हैं। सौम्यता का भाव भी इनके चेहरे से परिलक्षित होता है तथा विद्वता एवं बुद्धिमता के क्षेत्र में ये श्रेष्ठ होते हैं। नवीन विचारों का सृजन करने में ये चतुर होते हैं तथा लोग भी इनके विचारों से प्रभावित तथा सहमत रहते हैं जिससे समाज में ये आदरणीय प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध होते हैं। भौतिकता के प्रति इनका पूर्ण आकर्षण रहता है तथा भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मनन शीलता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना इनको सुखकर प्रतीत होता है। साथ ही प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुकता का प्रदर्शन करते हैं। ये अत्यंत ही व्यवहार कुशल होते हैं तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलता अर्जित करते हैं फलतः इनके उन्नति मार्ग सर्वदा प्रशस्त रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ बलवान एवं बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। अपनी बुद्धिमता से आप शास्त्रीय विषयों का परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में अपना वर्चस्व स्थापित करेंगे। आप एक विचारशील पुरूष होंगे तथा ब्रहम आदि के विषय में भी चिन्तनशील रहेंगे तथा भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। अतः धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे। आपका आचरण अच्छा होगा तथा धन संग्रह के प्रति आपकी प्रवृति रहेगी। सांसारिक कार्यों को करने में आप दक्ष होंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी तथा सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। आपको घर से अन्यत्र सुख एवं उन्नति प्राप्त होगी। अतः आपको जन्म भूमि से इतर स्थान को अपना कार्य क्षेत्र में बनाना चाहिए।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना होगी तथा उनके नाम से आपको जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही परिवारिक सम्मान एवं उन्नति की वृद्धि में भी आपका प्रमुख योगदान रहेगा तथा अपने श्रेष्ठ कार्यों से सामाजिक सम्मान प्राप्त करेंगें। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पत्नी के प्रति आपके मन मे तीव्र आकर्षण होगा फलतः आपके अधिकांश कार्य उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न होंगे। इसके साथ ही पुत्र संतति का भी आपको उचित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार धार्मिक कृत्यों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक एवं आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

Girl

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश समाज में विद्यमान रहता है। साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय महिला होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगी जिससे आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपके हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रर्दशन करेंगी। आपको स्वपरिश्रम से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगी तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोक प्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकती हैं।

लग्न में लग्नेश सूर्य की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप में शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी। राजनीति या सरकार अथवा व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगी तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा रहेगी तथा समय समय पर योगाभ्यास करेंगी। आप में गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा फलतः आपके कार्य धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी अपना योगदान प्रदान कर सकती हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रूचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानों की सैर करती रहेंगी। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Boy

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Girl

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगी तथा आपात्काल के लिए आप के पास कुछ न कुछ धन अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की आपके मन में प्रबल भावना रहेगी तथा इससे आपको अत्यंत ही प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। अतः समय समय पर अन्य जनों को अपने घर में आमंत्रित करती रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति से युक्त रहेगा तथा समृद्धि भी बनी रहेगी परन्तु पैतृक सम्पति को अल्प मात्रा में ही अर्जित करेंगी तथा जीवन में जो कुछ अर्जित करेंगी स्व परिश्रम तथा पराक्रम से करेंगी।

यह भाव वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा बुध ग्रह वाणी का प्रतिनिधिग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में मृदुता तथा ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित दौरान आपकी- ठोस तर्को से सहमत भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त अपने विचारों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ रहेंगी। आप अधिकांश धन अपनी विद्वता से अर्जित करेंगी। तथा जीवन में अन्य भौतिक सुख संसाधन तथा स्वर्णादि धातुओं की भी प्राप्ति होगी। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

Boy

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोंरजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्धान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे ।

Girl

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप प्रसन्नचित महिला होंगी तथा स्मरण शाक्ति भी तीव्र रहेगी एवं दीर्घकाल तक किसी दृष्ट वस्तु को नहीं भूलेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन भी शीघ्रता से करेंगी। जीवन में भाई बहिनों से युक्त रहेंगी तथा उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आप उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सुविधाएं प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी परन्तु यदि कभी वे आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते या प्रतिकूल व्यवहार करते है तो आप शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगी परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी। साथ ही पारिवारिक शान्ति के लिए ऐसे अवसरों की उपेक्षा भी करेंगी।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा उत्तेजना में कभी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगी। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगी तथा समाज में आदरणीय समझी जाएंगी। आपको संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरणों की प्राप्ति होगी तथा टेलीफोन दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुखी एवं वैभवशाली जीवन व्यतीत करेंगी। आपको रोमांटिक संगीत प्रिय

लगेगा तथा यदा कदा इससे मित्रों का मनोंरजन भी करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं भी होंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं ख्याति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही यात्रा के मध्य आपके नवीन मित्र बनेंगे। संबंधियों से आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी एवं अध्ययन कार्य के प्रति भी रूचिशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचल तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। साथ ही सेवक वर्ग की बहुलता रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा।

Boy

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते है।

Girl

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी

मंगल है तथा शनि भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप भौतिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगी तथा आधुनिक सुख-संसाधनों से भी युक्त रहेंगी। लेकिन शनि के प्रभाव से इनकी प्राप्ति में विलम्ब होगा तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। चूंकि आप एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान महिला है। अतः अपने इन गुणों से सुखों को अर्जित करने में सफल होंगी तथा आपका वांछित सामाजिक स्तर बना रहेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व आपको प्राप्त होगा तथा किसी बुजुर्ग महिला की चल एवं अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति हो सकती है। लेकिन जीवन में आपको विवादित सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति पर ही विशेष पूंजीनिवेश करना चाहिए।

आपको प्रारंभ में सामान्य घर में निवास करना पड़ेगा परंतु मध्यावस्था के बाद आपको अच्छे घर की प्राप्ति होगी। आपका यह घर आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप तत्पर होंगी। आपका घर मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे परंतु आपसी संबंधों में औपचारिक्ता अधिक होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आप पूर्ण रूपेण मध्यावस्था के बाद ही अर्जित करेंगी।

आपकी माता जी तेजस्वी बुद्धिमान एवं भौतिकवादी महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट रखेंगी। आपकी उन्नति में उनका पूर्ण योगदान होगा तथा समयानुसार उनसे आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग मिलता रहेगा लेकिन आप दोनों के मध्य यदा कदा सैद्धांतिक मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः आप दोनों को चाहिए कि ऐसी स्थितियां उत्पन्न न हों।

अध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन प्रारंभिक परीक्षाओं में आपको अच्छे अंक मिल सकते है। लेकिन स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तभी आप इसमें इच्छित सफलता अर्जित कर सकती है। यदि आप तकनीकी शिक्षा में डिप्लोमा या अन्य पाठ्यक्रम में प्रवेश ले तो आपको इसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति हो सकती है क्यों कि आप तकनीकी कार्य करने में काफी सुविधा महसूस करती है। इससे आपके आत्मविश्वास में भी वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य बनाने में समर्थ होंगी।

नैसर्गिक पापी ग्रह शनि की मंगल की राशि में स्थिति के कारण युवावस्था के बाद आप रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानियों की अनुभूति कर सकती है। अतः यदि आप प्रारंभ से ही ऐसे पदार्थो का सेवन न करें जिससे रक्त चाप या हृदय प्रभावित होता हो तो आप की उपरोक्त समस्याओं में कभी आएगी।

Boy

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

Girl

आपके जन्म समय में पंचमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। तथा शुक्र भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप होगी। आप शीघ्र निर्णय लेने या कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में पूर्ण रूपेण समर्थ होंगी जिससे समाज में आपका सम्मान एवं आदर रहेगा। वैदिक साहित्य एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी परन्तु कविता, पाश्चात्य साहित्य तथा नवीनतम तकनीकी ज्ञानार्जन में आपकी गहन रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों में ज्ञानार्जन करने में समर्थ होंगी। आप शोध सम्बन्धी कार्य भी सम्पन्न कर सकते है या अपने सतत् प्रयत्न के द्वारा कोई नवीन सिद्धान्त प्रतिपादित कर सकती हैं जिससे एक विदुषी के रूप में आप आदरणीय मानी जायेंगी।

शुक्र की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आप की काफी रूचि होगी तथा इनसे आप के मन में नवीन उत्साह का संचार होगा। परन्तु यदा-कदा मनोरंजन या दिलबहलाव के लिए भी आप ऐसे सम्बन्ध स्थापित कर सकती हैं। लेकिन प्रेम-प्रसंगों में यदि आप मर्यादा एवं नैतिकता की उपेक्षा करेंगी तो इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः भावनात्मक आकर्षण तक ही सीमित रहें।

शुक्र की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति की अधिकता हो सकती है। आपकी सन्तति योग्य, बुद्धिमान तथा चतुर होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान की भावना होगी तथा आज्ञापलन करने में तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह एवं सहयोग अवश्य लेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा साथ ही वृद्धावस्था में माता-पिता की श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। अतः इस संदर्भ में आप एक भाग्यवान महिला होंगी।

आपकी सन्तति प्रारम्भ से ही अध्ययन में रूचिशील होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से सन्तोषजनक उपलब्धि अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगी एवं आधुनिक परिवेश में उनहें ढालने का पूर्ण प्रयत्न करेंगी तथा बच्चे भी आपकी अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे। इसके अतिरिक्त वे व्यवहार कुशल तथा विनम्र स्वभाव के होंगे एवं अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रभावित रहेंगे। फलतः बच्चों के कारण आपके सामाजिक मान सम्मान में वृद्धि होगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Boy

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सवर्थवश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यो को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

Girl

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में मजबूत विपक्ष या शत्रु का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रही हों या स्वयं का कोई व्यवसाय चला रही हों तो सहयोगियों या साझेदार आदि से आपका विरोध या शत्रुता का भाव अपरिहार्य कारणों से उत्पन्न हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक किसी के साथ भी शत्रुता के भाव की उपेक्षा करेंगी परन्तु आपके कार्य कलापों से अन्य जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे। इसी संदर्भ में कोई मुकद्दमे बाजी प्रारंभ हो सकती है परन्तु आप अपने धैर्य बुद्धिमता शान्ति तथा प्रतिभा से शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी

तथा शत्रु की गतिविधियों से कभी भी विचलित नहीं होंगी।

आपकी सेवा करने के लिए आपके पास नौकर होंगे लेकिन उनकी संख्या अधिक रहेगी। अतः उनमें से कोई एक आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः नौकरों का चुनाव करते समय अत्यधिक सावधानी का पालन करना चाहिए। आपके संबन्धी भी आपके लिए कार्य क्षेत्र में यदा कदा हानिकारक सिद्ध हो सकते है तथा वे ही आपके वास्तविक शत्रु होंगे। अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

आप आवश्यकतानुसार सीमित व्यय करने की उत्सुक रहेंगी। अतः ऋण आदि लेने के अवसर बहुत कम आएंगे परन्तु युवास्था में स्थिति आ सकती है लेकिन आप उसका यथासमय भुगतान करने में समर्थ रहेंगी। मामा मामियों का आपके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे साथ ही मामाओं पर मामियों का अधिकार होगा। आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यद्यपि आप मुकद्दमे आदि की उपेक्षा करेंगी तथा कोर्ट से बाहर ही मामलों खत्म करने की इच्छा रखेंगी। यदि ऐसा नहीं होगा तभी आप कोर्ट में जाएंगी। इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं प्रभाव से विरोधियों का दमन करके शान्ति पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

Boy

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यो में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्यों संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी ।

Girl

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बुध भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया कुम्भ राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव पित प्रकृति कुल में श्रेष्ठ व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा बुध के प्रभाव से वह सुशील, बुद्धिमान एवं सांसारिक कार्य कलापों में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। वह अपने कुल में श्रेष्ठ होंगे तथा बुध के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगे । इसके अतिरिक्त सहिष्णुता का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा।

आपके पति सुंदर एवं गौर वर्ण की आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी ऊंचा होगा। बुध के प्रभाव से उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा शरीर पुष्ट एवं बलिष्ठ होगा जिससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति उनकी रूचि रहेगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत रहेंगे। इस प्रकार कला संगीत एवं सौन्दर्य का वह संगम होंगे।

आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप अपनी इच्छा से भी प्रेम विवाह सम्पन्न कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं परस्पर प्रेम आकर्षण तथा अपनत्व का भाव होगा साथ ही सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। आप दोनों बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा जीवन में मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी। अतः आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष धनवान एवं प्रभाशाली होगा। विवाह में मायके से आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं बहुमूल्य उपहार भी मिलेंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा वे भी आपको पुत्रीवत स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का प्रबल सेवा भाव रहेगा तथा अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को भी अपने मधुर स्वभाव तथा मृदुवाणी से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगे तथा वे भी उन्हें वांछित सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको विशिष्ट लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। संबंधी वर्ग से साझेदारी करने पर अतिरिक्त लाभ प्राप्त होगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Boy

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे ।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरूप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा आध्यात्म, ज्योतिष तथा तंत्र मंत्र आदि पर पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही इसका उचित ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। आपकी पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आप इससे लाभान्वित होती रहेंगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अवश्य होगी तथा किसी वृद्ध जन की जायदाद भी आपके नाम हो सकती है। आप सामान्यतया सर्व प्रकार से खुशहाल रहेंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनेंगी। आपके पास एक से अधिक आवास स्थल भी हो सकते हैं। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा एवं ससुराल पक्ष धनऐश्वर्य से युक्त रहेगा ।

बीमा आदि करवाने से आपको समय समय पर लाभ हो सकता है परन्तु दीर्घावधि की अपेक्षा लधुअवधि के बीमों से आपको शीघ्र एवं उचित लाभ की प्राप्ति हो सकती है तथा सम्बधित वस्तु की भी पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि का कोई विशेष योग नहीं है। यद्यपि एक बार चोर अवश्य इसके लिए प्रयत्न करेंगे लेकिन

किसी कीमती वस्तु को ले जाने में असफल रहेंगे अतः आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं की पूर्ण सुरक्षा रखनी चाहिए। साथ ही दुर्घटना आदि की उपेक्षा के लिए आपको तेज वाहन नहीं चलाना चाहिए साथ तथा शारीरिक सुरक्षा के लिए सतर्क रहना चाहिए। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

Boy

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र संबंधी शास्त्रों में भी आपकी रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबंधी कार्यो तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य क्रमों को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रूचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबंधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबंधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई धार्मिक एवं पुण्य संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते है । ये यात्राएं शिक्षा संबंधी भी हो सकते है या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबंधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

Girl

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगी तथा धार्मिक एवं पारिवारिक परम्पराओं को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप प्रतिदिन ईश्वर का ध्यान अवश्य करेंगी परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि आपके द्वारा यह विधान कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाया गया है। धार्मिक कार्यो पर व्यय करने में भी अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगी जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि की भी इच्छुक रहेंगी। तीर्थ स्थानों की यात्रा में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि भीड़ भरे वातावरण आप अपने लिए असुविधा जनक समझती हैं। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने में भी रूचिशील रहेंगी। साथ ही अर्न्तप्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी फलतः आपके द्वारा की गई भविष्य वाणियां प्रायः सत्य सिद्ध होंगी।

आप एक उच्च शिक्षा प्राप्त विदुषी होंगी तथा समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगी एवं विकट

परिस्थितियों में भाग्यबल से समाधान हो जाएगा तथा आप सुरक्षा की अनुभूति करेंगी। लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ सम्मान तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित होगी। पौत्रों से आपको खुशी एवं सहयोग मिलेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सम्मान ऐश्वर्य एवं खुशहाली प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा की प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगी ।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Boy

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्जवल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजैंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने,आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारभिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधो में भी मधुरता होगी तथाा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। वृष राशि भूमितत्व युक्त राशि है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा जलतत्व ग्रह के प्रभाव से इसमें आप सामान्यतया परिवर्तन करती रहेंगी तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आजीविका में आपके लिए कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में कार्य करना शुभ एवं अनुकूल होगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका प्रारंभ करेंगी तो आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगी। अतः आप को उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी, सोना, हीरा आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधी कार्य, सफेद वस्त्रों या रेशमी वस्त्रों का व्यापार एवं आयात निर्यात से भी लाभ होगा। साथ ही कीमती शराब, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण एवं फिल्म निर्माण का कार्य भी शुभ एवं अनुकूल रहेगा। अतः व्यापार से वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आपको इन्हीं वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में सफल होंगी। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं क्लब आदि में भी आप कोई सम्मानीय पदाधिकारी हो सकती है। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप सामाजिक एवं राज्यस्तर पर कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकती है।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा सामाजिक जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। वह बुद्धिमान शिक्षित एवं मनोरंजक प्रवृति के भी व्यक्ति होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा अपनत्व का भाव होगा एवं शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र में भी पिता से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं उनके प्रभाव से भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। आप दोनों के परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त पिता की आप आज्ञाकारी रहेंगी तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगी। इस प्रकार आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Boy

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराक्रमी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरूष भी होंगे तथा प्रसिद्ध धन-ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे । जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबंधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते है परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Girl

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी। साथ ही अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को समय समय पर परिश्रम एवं पराक्रम से पूर्ण करने में सफल होंगी। अपनी चतुराई तथा कार्यकुशलता से आप सदैव उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। आप की प्रवृति सक्रिय रहेगी तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने से धन एवं लाभ अर्जित करेंगी। लेखन, कमीशन, प्रेस,समाचारपत्र तथा व्यापारादि से आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित कर सकती हैं। यदि आप कहीं भी कार्यरत नहीं तो आपके पति इनसे लाभ अर्जित करेंगे। आपका ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से अधिक लगाव रहेगा तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह एवं सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगी तथापि भाइयों से आपको समय समय पर सहयोग मिलता रहेगा ।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली की आप सम्मान्नीया सदस्या होंगी तथा इनके मध्य आनन्द की अनुभूति करेंगी। आपके समस्त मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे

जिससे परस्पर कई विषयों पर तर्क वितर्क करेंगे इससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। समाज या अपने क्षेत्र में भी आप प्रतिष्ठत एवं ख्याति प्राप्त होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही लोगो की भलाई तथा सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेगी जिससे समय समय के साथ आपको किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगी तथा उनसे संबंध स्थापित करके प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Boy

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चो या किसी अन्य संबंधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धिमता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यो पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवयय करेंगे। साथ ही आवास संबंधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या धार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रूचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबंधी याात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

Girl

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धार्मिकता से युक्त रहेगी तथा तीर्थ यात्राओं पर आपका व्यय होगासाथ ही परोपकारी संबंधी कार्य तथा ब्राह्मणो की सेवार्थ आप किसी धार्मिक स्थल का निर्माण भी करवा सकती हैं। साथ ही कुआं, बगीचा या रास्ते आदि का निर्माण करके समाज में मान सम्मान अर्जित करेंगी। साथ ही परिवार एवं वच्चों के स्तर में वृद्धि पर भी आप इच्छित व्यय होगा।

आपका सामान्य व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः अवस्था के साथ साथ आपको आर्थिक परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है। आप एक स्वच्छंद प्रवृति की महिला होंगी तथा उनमुक्त हाथों से व्यय करेंगी एवं बिना अपनी आर्थिक स्थिति को देखे हुए अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएगी इससे आपके प्रभाव तथा मान सम्मान में वृद्धि तो होगी परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः ऐसे कार्यो को आप यदि सोच समझकर सावधानी से सम्पन्न करेंगी तो आप ऐसी स्थिति से सुरक्षित हो सकती हैं। युवावस्था में आपको कई प्रकार से उतार चढ़ाव देखने पड़ेगे लेकिन व्यय जैसा भी करेंगी शुभ ही अधिक करेंगी।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं

सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी तथापि भ्रमण आदि के लिए भी यात्राएं आदि होती रहेगी। साथ ही विदेश भ्रमण के योग भी बनते है तथा समयानुसार आप काफी समय तक वहां प्रवास भी कर सकती हैं। इस प्रकार आपका सामान्य समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।